සිංහල
ස්වයං ශික්ෂක

सिंहल स्वयं शिक्षक

नागरी लिपि में

बण्डार मैणिके दसनायक

බණ්ඩාර මැණිකේ දසනායක

सिंहल स्वयंशिक्षक

[देवनागरी लिपि में]

डॉ० कु० बी. एम. दसनायक



नागरी लिपि परिषद्
गांधी स्मारक निधि
राजघाट, नई दिल्ली

प्रकाशक : मंत्री

नागरी लिपि परिषद्

गाँधी स्मारक निधि

राजघाट, नई दिल्ली-११०००२

संस्करण : प्रथम, अप्रैल, १९७७

मूल्य : रु० १०.००

मुद्रक : विद्या-मंदिर प्रेस

रानी कटरा, लखनऊ-२२६०१

विषय-सूची

दो शब्द

विनोबा के मार्गदर्शन द्वारा हमने पिछले दो वर्षों में नागरी लिपि को भारतीय तथा एशिया की भाषाओं को एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रचार करने का प्रयास किया है। इन भाषाओं की विशिष्ट लिपियां अपने-अपने क्षेत्र में तो चलती ही रहेंगी किन्तु भारतीय तथा एशियाई भाषाओं के व्यापक प्रचार के लिए यह आवश्यक है कि उनका ज्ञान नागरी लिपि द्वारा उपलब्ध कराया जाए। इसी दृष्टि से नागरी लिपि परिषद् के प्रयत्नों से चीनी और जापानी भाषाओं को नागरी लिपि से सीखने के लिए उपयुक्त पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब हम सिंहल को भी नागरी लिपि के माध्यम से सीखने के लिए डा० कु० बण्डार मैणिके दसनायक की पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में सिंहल भाषा की अध्यापिका डा० कु० दसनायक ने एक पाठ्य पुस्तक के रूप में इस की रचना की है। वे श्रीलंका की निवासी हैं तथा उनकी मातृभाषा सिंहल है। जिसका उन्होंने गहरा अध्ययन किया है। इसलिए नागरी लिपि परिषद् ने यह कार्य उन्हें सौंपा तथा उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार किया। इसके लिए हम उनके आभारी हैं।

हमें पूरी आशा है कि डा० कु० दसनायक द्वारा लिखित यह पुस्तक संसार में विशिष्ट भाषा परिवार का प्रतिनिधित्व करने में सफल होगी तथा भारतीयों के लिए उनके निकटतम पड़ौसी देशों से आदान-प्रदान का माध्यम बन सकेगी।

श्री श्रीमन्नारायण
अध्यक्ष
नागरी लिपि परिषद्

प्रशस्ति

दै.नैट नव दिल्लिये जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालये, सिंहल अंशय भारव कटयुतु करण आचार्य बन्डार मैणिके दसनायक मेनेविय विसिन रचित "सिंहल स्वयं शिक्षकया" नैमति ग्रन्थयट मेसे पेरवदनक् सैंपयीमट अवस्थाव लैबीम मगे इमहत् संतुटट हेतुवकि। अलुतेन सिंहल भाषाव हैदरीमट अभिलाषयक दक्वन इंदीय सिसुनट आचार्य दसनायक मेनेवियगे में ग्रन्थय महोपकरीवनु अतैयि मम विश्वास करमि।

आसन्न रटवल देकक् अतर सम्बन्धय तहवुरु किरिमेहि ला इता प्रवल साधकयक् वनुये एक रटक भाषाव हैदैरीमट, असलवैसि अनेक रटे वैसियन विसिन गन्ना प्रयत्न यथि। सिंहल भाषावतें संस्कृत आभाषय सहित उतुरु इन्दियानु भाषावनुत् अतर पवतूना किट्टु सम्बन्धय निसाद इन्दियावत् श्री लंकावत अतर पवतना सहस्र वर्षाधिक अन्योन्य सुहृदताव निसाद इन्दीय वैसियन विसिन् सिंहल भाषाव हैदैरीमेहिला गन्ना उनन्दुव वडात् .वैदगत वे।

मेवैनि ग्रन्थयक् प्रसिद्ध किरोमेहिला इदिरिपतवू गांधी स्मारक निधियेहि अधिकारोन्ट श्रीलंका महा कोमसार दिसवशयेन अतिशयिन स्तुतिवन्त वेन अतर मेवैनि ग्रन्थयन् वैडिदुरटत् प्रसिद्ध किरीमेहिला हैकियाव हा धैर्य्य ओवुन्ट लैबैवायि प्रार्थना करमि।

श्रीलंका गणराज्य
महा कोमसारिस कार्यालय
२७, कौटिल्य मार्ग,
नई दिल्ली
१९७७-४-१४

जस्टिन सिरिवर्धन
इन्दियावे श्री लंका महाकोमसारिस,
नव दिल्लिय

प्रशस्ति

नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के सिंहल भाषा के आचार्य बण्डार मैंणिके दसनायक मेणेविय द्वारा रचित सिंहल स्वयं शिक्षक नामक इस ग्रन्थ का प्रशस्ति लिखने का मुझे जो मौका मिला इससे मुझे प्रसन्नता है। सिंहल भाषा के नवक भारतीय विद्यार्थियों के लिये आचार्य कु० दसनायक का यह ग्रन्थ सहायक होगा ऐसा मैं विश्वास करता हूँ।

दो पड़ोसी देशों के बीच सम्बन्ध को स्थाई करने के लिये एक देश की भाषा के अध्ययन का पड़ोसी दूसरे देश की जनता द्वारा यह प्रयत्न एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण है। सिंहल भाषा पर संस्कृत प्रभाव भी उत्तर भारतीय दूसरी भाषाओं के बीच विद्यमान अति समीप के सम्बन्ध के कारण भी भारत श्रीलंका के बीच सहस्रों वर्षों से विद्यमान सम्बन्ध के कारण भी भारतीय जनता द्वारा सिंहल के अध्ययन में ली जानेवाली रुचि महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार के ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिये गांधी स्मारक निधि के अधिकारियों ने जो उत्साह दिखलाया है उसके प्रति श्री लंका के उच्चायुक्त के नाते कृतज्ञ होने साथ ही उत्तरोत्तर इस प्रकार के कार्य करने के लिये उन्हें शक्ति और धैर्य मिले, यही हमारी कामना है।

श्रीलंका गणराज्य
महा कोमसारिस कार्यालय
२७, कौटिल्य मार्ग,
नई दिल्ली
१४-४-७७

जस्टिन सिरिवर्धन
भारत स्थित
श्रीलंका गणराज्य के
उच्चायुक्त,
नई दिल्ली

प्रस्तावना

भाषा शास्त्रियों ने संसार की भाषाओं को आर्य, तुराण (द्राविड़) और सिमिटिक, इन तीन प्रमुख भागों में बाँटा है। अति प्राचीन काल में बहुत ही शिष्ट एक मनुष्य वर्ग परसिया में रहता था और पश्चात् काल में उनमें से कुछ लोग यूरोप तथा कुछ लोग हिन्दुस्तान में संक्रमण करके बस गये। ये लोग आर्य "एरियन" के नाम से विख्यात थे। इन आर्य या एरियन लोगों का मूल स्थान परसिया न होकर रशिया के वोल्गा तट होना भी एक मत है। जो हो इन आर्यों की भाषा के आधार पर विकसित भाषाएं आज "आर्य भाषा परिवार' की हैं।

तुराण-भाषा, तामिल, तेलगू, कन्नड़ एवं मलयालम की सीमा से उस पार होने पर भी सिंहल भाषा भी हिन्दी, बंगला, मराठी, सिंधी आदि की भांति इसी इन्दू आर्य परिवार की है।

इन्दू–यूरोपीय परिवार की भाषाएं

एशियायी—१—संस्कृत, पालि, प्राकृत प्रमुख ११ भाषायें।
२—परसियन प्रमुख इरानी भाषाएं।
३—आर्मेनियन भाषा।

यूरोपीय —१—हेलनिक अर्थात ग्रीक भाषा से सम्बन्धित सभी भाषाएं।
२—अल्बेनियन भाषा।
३—इटलिक, लैटिन, फ्रांस, स्पेनिस, पोर्चुगीज आदि भाषाएं।
४—सल्टिक, कोर्निश, वेल्स, ब्रताान्य, ऐरिश, ग्रैलिक अर्थात स्काच, मानिस आदि।

५—एलेबोनिक, रशियन, पोलिश आदि ।

६—ट्यूसेनिक, जर्मन, अंग्रेजी, नोर्स, डच आदि ।

आर्य परिवार की ही इन्दू तथा यूरोपीय भाषाओं की लिपियों में अन्तर है। यूरोपीय भाषाओं की लिपि में इन्दू की भाषाओं की अपेक्षा अक्षर कम हैं। इतना ही नहीं अनावश्यक अर्थात् अनुच्चारित कुछ अक्षर भी उनमें व्यवहृत होते दिखते हैं। इसलिये जैसा वह लिखा जाता है वैसा ही उच्चारण नहीं किया जाता है।

श्री लंका में विजय कुमार का आगमन ईस्वी पूर्व ५४३ में हुआ था। उनके साथी परिजन तथा पश्चात काल के पन्डु वासुदेव राजा आदि जो इस द्वीप में आये वे दक्षिण भारत के नहीं उत्तर भारत के ही थे और उन्हीं की सन्ताने आज सिंहल अर्थात श्रीलंका की मुख्य जनसमूह है।

विजय और उनके परिजन मागधि प्राकृत भाषा भाषी थे। भारत में पाणिनी व्याकरण की रचना विजय के सिंहल आगमन के २०० वर्षों के बाद हुयी थी। पंडु वासुदेव के समय में ही सिंहल में पण्डुल के नाम से एक शास्त्र वेत्ता पंडित का भी निवास था। उनके सान्निध्य में पाण्डुकाभय आदि राजकुकार विद्याध्ययन करते थे।

ईस्वी ३०७ में महामहेन्द्र के सिंहल में अर्थकथाएं लिखने का उल्लेख मिलता है। अतः प्राचीनतम सिंहल भाषा ईस्वी पूर्व ३०७ से मानी जा सकती है। पालिपिटक की सिंहल अर्थ कथाओं का पश्चात् काल में आचार्य बुद्धघोष ने पालि में अनुवाद किया जो आज भी हमारे लिये सुरक्षित हैं।

उपलब्ध प्राचीनतम तोणिगल शिलालेख ईस्वीपूर्व १६१-१३७ ई० की है।

अक्षरमाला

इन्दू आर्य परिवार की भाषाओं की अक्षरमाला एक है। परन्तु इनके रूप में अन्तर है। देवनागरी तथा शेष वर्तमान भारतीय भाषाओं के अक्षरों

का मूल ब्राह्मी अक्षर है। सिंहलअक्षरों का मूल रूप भी यही ब्राह्मी लिपि है। समय समय पर परिवर्तित होती हुयी आकर वर्तमान स्वरूप में सिंहल लिपि १५ वीं शताब्दी में आयी है।

लिपियों में उच्चारण की दृष्टि से पूर्ण लिपि संस्कृत भाषा के उच्चारण की मानी जाती है। कर्ण-मधुर स्वरों का प्रयोग प्राय: सभी प्रिय करते हैं। अत: अधिकांश भाषाओं ने कर्ण कटु उच्चारण वाले स्वर व्यजनों को त्याग दिया है। श्री लंका के शुद्ध सिंहल ने भी यही किया। लेकिन पश्चात काल के मिश्रित सिंहल में पालि-संस्कृत उच्चारणों का सहारा लिया है। अत: चार स्वर भी अधिक बन गये हैं।

सिंहल भाषा देशीय प्राकृत होने के कारण मागधि भाषा के शब्दों का बाहुल्य है। अत: प्रथम शताब्दी तक शुद्ध सिंहल को बचाये रखने में समर्थ रही है। लेकिन वर्तनान सिंहल शब्द कोष में पालि, प्राकृत संस्कृत ही नहीं तामिल, पोर्चुगीज, डच तथा अंग्रेजी शब्दों का भी खुलकर प्रयोग मिलता है।

शुद्ध सिंहल तद्भव शब्द मागधि से आये हैं जो इस तालिका से स्पष्ट होता है :–

संस्कृत	मागधि	सिंहल
प्राण	पाण	पण
तृष्णा	तण्हा	तण
चूर्ण्ण	चुण्ण	सुणु
वर्ण	वण्ण	वण
ऋण	इण	णय
वृक्ष	रुक्ख	रुक
कर्ण	कण्ण	कन
श्रवण	सवण	सवन
धरणी	धरणी	देरण
आभरण	आभरण	अबरण

एक ही अर्थ के शब्द मागधि से आने पर तथा संस्कृत से आने पर भिन्न रूप में भी व्यवहार में आये है—

मागधि	सिंहल	संस्कृत	सिंहल
अत्थ	अत्	अर्थ	अरुत्
इत्थी	इति	स्त्री	इतिरि
मित्त	मित्	मित्र	मितुरु
धम्म	दम्	धर्म्म	दरुम
वस्स	वस	वर्ष	वरुस

मिश्र सिंहल में मागधी नहीं संस्कृत शब्द सिंहल के साथ व्यवहृत हुये हैं। "बुदुन-यमक प्रातिहार्य करन कल्हि ओवुन्गे, शरीरयेन, निक्मेन द्वितीय द्वितीय रश्मिहु पूर्व-पूर्व रश्मियट युवल युक्तवै पवतुनवुन सेयिन एकक्षणयेहिम पवतित्—धर्मप्रदीपिका।

कुछ सिंहल शब्द प्राकृत के तत्तम या अतिसमीप से व्यवहार में आये हैं।

प्राकृत	सिंहल	प्राकृत	सिंहल
कुमार	कुमार	एव्व	ओव्
तण	तण (दृण)	ओसऊ	ओसु
दह	दहय- दह	कवि	किवि (पंडित)
कलुण	कुलुणु	राई	रै
कहावण	कहवणु	विज्जूलि	विदुलि

इसी प्रकार जावा, मलयालम, तामिल, पोर्जुगीज, डच, और अंग्रेजी शब्द भी आज सिंहल तद्भव एवं तद्सम रूप में व्यवहृत हैं।

प्रारम्भ में सिंहल शब्दों में बहुत कम प्रत्यय लगे थे। बहुत से विभक्तियर्न से अतशब्द धकता स्वाभाविक रूप में लगे थे। सिंहल भाषाके

व्यवहार में आने के लगभग १८०० वर्षों के बाद लिखित 'सिदत् संगरा' नामक व्याकरण ग्रन्थ में लिखा है कि 'शब्दयो बोहो सेयिन सियलु विभवितयेहि स्वकीय शब्द रुपय अतनोहर सिटित्"। लेकिन मिश्र सिंहल में मागध संस्कृत भाषाओं के अनुसार प्रत्ययों के लगाने का चलन १२ वीं शताब्दी में होने लगा था। अतः सिंहल भाषा "कथा व्यवहार" में अंग्रेजी जैसी वियोगिक एनेलिटिक भाषा वर्ग में नहीं है अपितु संयोगिक "सिन्थेटिक" भाषा वर्ग की है।

सिंहल व्याकरण

किसी भी भाषा में सही सही प्रयोग कीं विधि व्याकरण से ही जानीं जा सकती है। अतः सिंहल व्याकरण भी अक्षर विचार, शब्द साधन, क्रिया, कारक पद सम्वन्ध के रूप में तीन भागों में विभक्त हैं।

शब्द साधन के लिये प्राचीन आचार्यों ने बीस प्रकार की विधिया बतलाई हैं। वे हैं, संज्ञा, सन्धि, लिंग, विभक्ति, समास, प्रकृति, प्रत्यय, क्रिया, लोप, आदेश, आगम, पूर्वरूप, द्विरूप, पर्याप्य, वृद्धि, हानि, निपात, नियमविधि, अनियम विधि, अविद्यमान विधि हैं।

आज की सिंहल भाषा में दो रूप व्यवहार में आते हैं। एक जो बोल चाल की है दूसरी जो लिखित रूप में अर्थात साहित्य में।

महात्मा गांधी ने हिन्दुस्तानी के रूप में सरल हिन्दी का प्रयोग भारतीय जनता में बहु प्रचलित किया था। लेकिन सिंहल की साधारण भाषा इससे भी भिन्न है। बोलचाल की भाषा बहुत ही सरल है। क्योंकि इसके लिए वचन, लिंग, काल आदि किसी की भी आवश्कता नहीं है। इसके कुछ उदाहरण नीचे दे रहे हैं—

वर्तमान कालय

एक वचन	बहु वचन
मम गेदर यनवा	अपि गेदर यनवा
मम गेदर यमि	अपि गेदर यमु

अनागत कालय (भविष्य)

मम गेद यनवा	अपि गेदर यनवा
मम गेदर यन्नेमि	अपि गेदर यन्नेमु

अतीत कालय (अतीत)

मम गेदर गिया	अपि गेदर गिया (बोलचाल)
मम गेदर गियेमि	अपि गेदर गियेमु (व्याकरण)

अन्य पुरुष, ओहु, ओवुहु, औ आदि

ओहु गेदर यनवा	ओवुहु गेदर यनवा
ओहु गेदर ययि	ओवुहु गेदर यति

अनागत कालय

ओहु गेदर यनवा	ओवुहु गेदर यनया
ओहु गेदर यन्नेय	ओवुहु गेदर यन्नोय

अतीत कालय

ओहु गेदर गियेय	ओवुहु गेदर गियोय
ओहु गेदर गिया	ओवुहु गेदर गिया

मध्यम पुरुष ओब, ओबला

वर्तमान कालय

ओब गेदर यनवा	ओवला गेदर यनवा
ओब गेदर ययि	ओवला गेदर ययि

अनागत कालय

ओब गेदर यनवा	ओबला गेदर यनवा (बोल चाल)
ओब गेदर यन्नेहिय	ओवला गेदर यन्नाहुय (व्या०)

यहाँ इस पुस्तक में हमने साधारण सिंहल का ही परिचय देने का प्रयास किया है। हमने इस बात का ध्यान रखा है कि कम से कम शब्दों में कम से कम समय में साधारण बोल चाल का अभ्यास साहित्यकार, राजनीतिज्ञ तथा यात्रियों को कराया जाय।

सिंहल की अपनी कुछ विशिष्ट, उच्चारण भी है जिन्हें देवनागरी के वर्तमान स्वरूप में ही नये चिन्ह लगाकर दिखाये हैं। किसी भाषा की विशेषता तथा विशेष उच्चारण किसी दूसरी भाषा में लिखकर नहीं दिखलाये जा सकते हैं तो भी देवनागरी लिपि में यह क्षमता है कि वह किसी भी स्वर को, व्यजन को आत्मसात कर दिखला दें। देवनागरी लिपि में ही भारत की वर्तमान १५ भाषाओं को लिखने-पढ़ने का प्रयास स्तुत्य है।

श्रीं लंका की शिक्षण संस्थाए दो मुख्य भागों में विभाजित है। परिवेण एवं आधुनिक स्कूली शिक्षा। परिवेण पद्धति कीं प्रायः सभी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षित व्यक्ति नागरी लिपि से परिचित है। अतः पालि संस्कृत शिक्षा के कारण यह ऐक्ट श्री लंका में ऐतिहासिक काल से चला रहा है। अतः हमारा यह विश्वास है कि यदि भारतवासियों ने इसे क्रियान्वित कर दिखलाया तो श्री लंका भी इसे अपनायेगी। क्योंकि मूल में यह सभी एक हैं। हमारी इस बात के साक्ष स्वरूप हम इस छोटी सी पुस्तक को सिंहल स्वयं-शिक्षक (सिंहल स्वयं शिक्षकया) पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। इसी विषय को विस्तार से दिखलाने के लिये हमने "सिंहल-हिन्दी भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" प्रस्तुत करने का भी निश्चय किया है।

गांधी स्मारक निधि के तत्वावधान में संचालित नागरी लिपि परिषद का यह प्रयास है कि नागरी लिपि में भी सभी भारतीय एवं समीपवर्ती देश अपनी-अपनी भाषाओं की नई-नई कृतियों को प्रस्तुत करें और एक सार्वदेशिक लिपि के रूप में नागरी का भी प्रयोग करे। इस दिशा में आज से १५-१६ वर्ष पूर्व से ही बुद्ध विहार लखदऊ भी प्रयत्नशील है। सिंहल की १५ वीं शताब्दी की एक ऐतिहासिक रचना "बुद्ध गुणालंकार" को इस संस्था ने नागरी लिपि में प्रकाशित किया है।

सिंहल स्वयं-शिक्षक को लिखवाने का श्रेय गाँधी स्मारक निधि नागरी लिपि परिषद, राजघाट, नई दिल्ली के श्रीमन्नारायण प्रमुख अधिकारियों को है। अतः इसका श्रेय उन्ही लोगों को मिलना चाहिये।

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के अपने सहयोगी श्री हर प्रसाद राय, डॉ० चन्द्रदत्त पालिवाल आदि ने इस प्रकार की कृति को प्रस्तुत करने का मार्गदर्शन किया और आवश्यक सलाह देते रहे। अतः इन सहयोगियों के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

हमारे कार्य में सदा शुभ कामना रखने वाले पूज्य पिता-माता, तथा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के अफ्रिकी-एशियाई-भाषा केन्द्र के अध्यक्ष प्रो० एस० एम० एम०, नयनार, भूतपूर्व अध्यक्ष, डा० ए० डब्लू० अजहर तथा उक्त केन्द्र के सभी सहयोगियों की शुभ कामनाओं के लिये हम कृतज्ञ हैं।

गाँधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली के नागरी लिपि परिषद् के श्री भवानी प्रसाद मिश्र और श्री र० ण० त्रिवेदी ने विशेष रुचि लेकर इस कार्य को सम्पन्न कराया है। अतः हम इन के विशेष कृतज्ञ हैं।

श्री लंका गणतंत्र के नई दिल्ली स्थित उच्चायोग के उच्चायुक्त श्री जस्टिन सिरिवर्धन के हम कृतज्ञ हैं जिन्होंने कृप'पूर्वक इस पुस्तक के विषय में प्रशस्ति लिख कर उत्साह वर्धन किया है। उच्चायोग के श्री डिक्मन द अौल्विस प्रमुख सभी सचिव एवं कर्मचारियों के भी हम कृतज्ञ हैं जिन्होंने हमारी प्रगति में विशेष रुचि दिखलायी हैं।

पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट १, २, एवं ३ दिये है। परिशिष्ट १ में व्याकरण सम्बन्धी शब्द, परिशिष्ट २ में विषयानुसार शब्द तथा परिशिष्ट ३ में सामान्य शब्द सूची दिये हैं। आधुनिक विद्यार्थियों को इस से विशेष सहायता मिलेगी।

अफ्रीकी एशियाई भाषा केन्द्र,
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली।

डा० (कु०) बण्डारमैणिके
दसनायक
१४-४-१९७७

पाठ—१

सिंहल वर्णमाला

सिंहल भाषा की वर्णमाला में दो स्वरूप माने गये हैं। एक है शुद्ध सिंहल तथा दूसरा है मिश्र सिंहल।

शुद्ध सिंहल में : केवल बत्तीस अक्षर हैं :—

अ आ अॅ अॅा इ ई उ ऊ
ए ऍ ओ ऑ

क ग ज
ट ड ण
त द न
प ब म व
य र ल
स ह ळ
(अं)।

सिंहल के प्राचीनतम व्याकरण ग्रन्थ "सिदत् सन्गराव" का मत है कि ए तथा ऐ और अ तथा आ की मात्रा—वृद्धि मात्रा है। इस रूप में देखने से शुद्ध सिंहल केवल शेष तीस अक्षरों पर ही आधारित है।

वर्तमान मिश्रित सिंहल ने पालि वर्णमाला के जितने भी अधिक अक्षर थे, उनको अपनी वर्णमाला में अपना लिया है। इसके अतिरिक्त संस्कृत वर्णमाला में भी जितने अक्षर अधिक थे, उन सब को भी अपना लिया है। इस प्रकार वर्तमान मिश्रित सिंहल में चौवन अक्षर हैं।

मिश्र सिंहल

स्वर :

अ	आ	अॆ	अॅ	इ	ई	उ	ऊ
ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए	ऐ	ऐ	
ओ	ओं	औ					

व्यञ्जन :

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	ळ
अं	अः			

यह सम्पूर्ण वर्णमाला एक प्रकार से हिन्दी वर्णमाला ही है। ऋ ॠ ऌ ॡ श ष-संस्कृत के विशिष्ट उच्चारण हैं। मागधी तथा संस्कृत के ख, घ, औ, च, छ, झ, ञ, ठ, ढ, थ, ध, फ भ ये तेरह अक्षर शुद्ध सिंहल में नहीं है। ह्रस्व ए और ओ ये दोनों अक्षर संस्कृत वर्णमाला में नहीं है। मागधी में संयुक्त वर्ण से पहले जो "ए" अथवा "ओ आते हैं उनका उच्चारण ह्रस्व ए तथा ह्रस्व ओ के समान ही होते

है। इसलिए पालि व्याकरण के अनुसार पालि में आठ स्वर होते हैं, अतः सिंहल में दस स्वर कहे जा सकते हैं।

स्वर तथा व्यञ्जन

शुद्ध सिंहल में अ से ओ तक के दस अक्षर स्वरों में तथा शेष बाईस अक्षर व्यञ्जनों में गिने जाते हैं। मिश्रित सिंहल में अट्ठारह अक्षर "स्वर" तथा शेष बत्तीस अक्षर "व्यञ्जन" माने जाते हैं।

स्वर :—

बिना किसी दूसरे अक्षर पर निर्भर किए हुए जिन अक्षरों का उच्चारण किया जा सकता है। वे स्वर कहलाते हैं। शुद्ध सिंहल में ऐसे अक्षरों को पण-कुरु (प्राणाक्षर) या स्वर कहते है।

व्याकरण के अनुसार स्वरों के ह्रस्व तथा दीर्घ दो भेद है। इसके अनुसार शुद्ध सिंहल में अ ॲ इ उ ए तथा ओ ह्रस्व अक्षर हैं। शेष आ ॵ ई ऊ तथा ओ दीर्घ अक्षर हैं।

व्यञ्जन :—

जिन हलन्त अक्षरों का बिना दूसरे अक्षरों की सहायता लिए उच्चारण कर सकना कठिन है, वे व्यञ्जन कहलाते हैं। सुविधानुसार हम व्यञ्जन अक्षरों को क, ख आदि करके लिखते हैं; किन्तु उनके सही उच्चारण के अनुसार उन्हें क्, ख् आदि रूप में लिखना चाहिये। उदाहरणार्थ क्+अ=क; ख्=अ=ख। शुद्ध सिंहल में इन व्यञ्जन अक्षरों को हल् अकुरु (हल-अक्षर) या गतकुरू कहते हैं। संस्कृत में भी ये गात्राक्षर या मिश्रिताक्षर कहलाते हैं।

मिश्रित सिंहल में अथवा वर्तमान सिंहल में स्वरों की संख्या अठारह होने से हम सिंहल के व्यंजन स्वर संयोग को अठारह रूप में लिख सकते हैं।

क् + अ = क
क् + आ = का
क् + अै = कै
क् + अैँ = कैँ
क् + इ = कि
क् + ई = की
क् + उ = कु
क् + ऊ = कू
क् + ऋ = कृ
क् + ॠ = कॄ
क् + ऌ = क्लृ
क् + ॡ = क्लॄ
क् + ए = के
क् + ए॑ = के॑
क् + ऐ = कै
क् + ओ = को
क् + ओ॑ = को॑
क् + औ = कौ

कै, कैँ तथा को॑ सिंहल भाषा के लिए ही विशेष अक्षर है। हिन्दी, संस्कृत अथवा पालि किसी भी भाषा में कै, कैँ इन दोनों उच्चारणों को प्रकट करनेवाला कोई पृथक चिन्ह नहीं है।

मात्राएँ

क	का	कै़	कैँ	कि	की	कु	कू
के	कें	कै	को	कों	कौ		
कं	कः						
च	चा	चै़	चैँ	चि	ची	चु	चू
चे	चें	चै	चो	चों	चौ		
चं	चः						
ट	टा	टै़	टैँ	टि	टी	टु	टू
टे	टें	टै	टो	टों	टौ		
टं	टः						
त	ता	तै़	तैँ	ति	ती	तु	तू
ते	तें	तै	तो	तों	तौ		
तं	तः						
प	पा	पै़	पैँ	पि	पी	पु	पू
पे	पें	पै	पो	पों	पौ		
पं	पः						
य	या	यै़	यैँ	यि	यी	यु	यू
ये	यें	यै	यो	यों	यौ		
यं	यः						
स	सा	सै़	सैँ	सि	सी	सु	सू
से	सें	सै	सो	सों	सौ		
सं	सः						
ळ	ळा	ळै़	ळैँ	ळि	ळी	ळु	ळू
ळे	ळें	ळै	ळो	ळों	ळौ		
ळं	ळः						

शुद्ध सिंहल के संयुक्त वर्ण

ँ + ग = ँग, अँग (अङ्ग)
ण + ड = ँड, सैंड (चण्ड)
न् + द = ँद, ळिंद (कुंआ)
म् + ब = ँब अंब (आम)

मिश्र सिंहल के संयुक्त वर्ण

क् + ष = क्ष = पक्ष (पक्ष)
त् + थ = त्थ = अत्थ
क् + य = क्य = वाक्य
क् + र = क्र = चक्र
क् + व = क्व = पक्व
ग् + ध = ग्ध = विदग्ध
ज + ञ = ज्ञ = अज्ञ
ञ् + च = ञ्च = पञ्च
ञ् + ज = ञ्ज = कुञ्ज
ट् + ठ = ट्ठ = दुट्ठ (दुष्ट)
त् + व = त्व = सत्त्व
द् + ध = द्ध = बद्ध
द् + व = द्व = द्वय
न् + थ = न्थ = ग्रन्थ
न् + द = न्द = नन्द
न् + ध = न्ध = अन्ध
न् + व = न्व = अन्व
र् + ग = र्ग = वर्ग

अक्षर-त्रय के संयुक्त वर्ण

क्	+	ष्	+	ण	=	क्षण	=	तीक्ष्ण
क्	+	ष	+	म	=	क्षम	=	सूक्ष्म
ङ्	+	क्	+	ति	=	ङ्क्ति	=	पङ्क्ति
न्	+	त्	+	र	=	न्त्र	=	यंत्र
न्	+	द्	+	र	=	न्द्र	=	चन्द्र

पाठ—२

Pronous—सर्वनाम

Nominative	Objective	Possessive
मम = मैं	मट = मुझे	मगे = मेरा
अपि = हम	अपट = हमको	अपे = हमारा
ओब = आप	ओबट = आपको	ओबगे = आपका
ओहु = वह	ओहुट = उसको	ओहुगे = उसका
ओवुहु = वे	ओवुनट = उन लोगों को	ओवुन्गे = उन लोगों का
अैय = वह(स्त्री०)	अैयट = उस(स्त्री०)को	अैयगे = उस(स्त्री०) का, की, के

निरादर-सूचक

तो = तू	तोट = तुझे	तोगे = तेरा
ऊ = वह	ऊट = उसे	उगे = उसका

बजारू एवं समानार्थ में

तमुसे = आप या तुम तमुसेट = आपको या तुम्हें

तमुसेगे = आपका, की, के, तुम्हारा, री, रे

विशेष गौरवार्थ में

ओब तुमा = आप (गृहस्थ)	ओब तुमाट = आपको	ओब तुमा गे = आपका, की, के
ओब वहंसे = आप (प्रवृजित)	ओब वंहसेट = आपको	ओब वहंसेगे = आपका, की, के

मम = मैं	कवुद = कौन
अपि = हम	कोतनद = कहां
ओव = आप	एतन = उस जगह, उधर
ओवला = आप लोग	मेतन = इस जगह, यहाँ
तुम्ब = / उम्ब = } तुम	एहि = वहां
तुम्बला = / उम्बला = } तुम लोग	मेहि = यहां

मम वेमि	मैं हूँ।
अपि वेमु	हम हैं।
मम मेतन वेमि	मैं इधर हूँ।
अपि एतन वेमु	हम उधर हैं।
मम मेहि वेमि	मैं यहां हूँ।
अपि ऐहि वेमु	हम वहां हैं।
मम शिष्येक् वेमि	मैं विद्यार्थी हूँ।
अपि शिष्ययो वेमु	हम विद्यार्थी हैं।
मम गुरुवरयेक वेमि	मैं अध्यापक हूँ।
अपि गुरुवरु वेमु	हम अध्यापक हैं।
मम मिनिहेक वेमि	मैं मनुष्य हूँ।
अपि मिनिसुसु वेमु	हम मनुष्य हैं।

इन शब्दों से वाक्य बनाइये—

वेमि = हूँ।	मेहि = यहां
वेमु = हैं।	एहि = वहां
मेतन = इधर	शिष्ययेक् = विद्यार्थी
एतन = उधर	गुरुवरयेक् = अध्यापक
मिनिहेक् = आदमी	स्त्रियक = एक स्त्री

पाठ—३

INTERROGATIVET :—	प्रश्न वाचक
कवुद ?	कौन है ?
कुमकूद ?	क्या है ?
कुमटद ? ऐयि ?	क्यों ? किसलिए ?
कवदाद ?	कब
केसेद ?	कैसा ? कैसे ?
कागेद ?	किसका ? किनका ?
काटद ?	किसको ? किनको ?
कीयद ?	कितना, कितने ?
कोपमन लोकुद ?	कितमा वड़ा है ?
कोपमन दिगद ?	कितना लम्बा है ?
कवदा वेनतुरूद ?	कब तक ?
कोपमन पोडिद ?	कितना छोटा है ?
कोहे सिटद ?	कहां से ?
कोतन दकूवाद ?	कहां तक ?
ओव कवुद ?	आप कौन है ?
उम्ब कवुद ?	तुम कौन हो ?
में कुमकूद ?	यह क्या है ?
ओहु कोहेद ?	वह कहां है ?

मेंवा मोनवाद ?	ये क्या हैं ?
मेतन कुमकूद ?	इधर क्या है ?
एतन कुमकूद ?	उधर क्या है ?
ओव कोहेद ?	आप कहां है ?
ऐं कवुद ?	वह कौन है ?
ऐय कवुद ?	वह (स्त्री०) कौन है ?
पोत कोहेद ?	किताब कहां है ?
मेंसय उड कुमकूद ?	मज पर क्या है ?
में ळमया कोहेद ?	यह बालक कहां है ?
गेदर कवुद ?	घर में कौन है ?
ओवें नम कुमकूद ?	आपका नाम क्या है ?
ओवें अम्मा कोहेद ?	आपकी माताजी कहां है ?
कामरये कवुद ?	कमरे में कौन है ?
तीनूत कोहेद ?	स्याही कहां है ?
कनतोरुव कोहेंद ?	दफ्तर कहां है ?

इन शब्दों से वाक्य बनाइये—

मोनवाद = क्या हैं ?

कवुद = कौन है ?

कोहेंद = कहां है ?

कुमकूद = क्या है

गेदर = घर

कामरय = कमरा

कन्तोरुव = दफ्तर

ळमया = बालक

तीन्त = स्याही

उम्ब = तुम

मेंसय = मेज

अम्मा = माता

ओव = आप

पाठ—४

परिवार = Family

पवुल = परिवार
तात्ता = पिता
अम्मा = माता
अय्या = बड़ा भाई
अक्का = बड़ी बहन
मल्ली = छोटा भाई
नंगी = छोटी बहन
पुता = पुत्र, बेठा
दुव = दुहितृ, बेटी
दरुवा = बालक
मिनिहा = आदमी
गैंनी = औरत
सहोदरया = भाई
सहोदरी = बहन
मामा = मामा
मामी = नैन्दा
बाप्पा = चाचा
पुँचि अम्मा = चाची

मे मंगे तातूता	यह मेरे पिता
मे मंगे अम्मा	यह मेरी माता
ऐ मंगे अय्या	वह मेरा बड़ा भाई
ऐ ओवगे मल्ली	वह आपका छोटा भाई
अैय मंगे अक्का	वह मेरी बड़ी बहन
में ओहुगे बाप्पा	यह उसका चाचा
मगे नंगिगे नम कमला	मेरी छोटी बहन का नाम कमला।
अम्मा गेदर यनवा	माता जी घर जा रही है।
मामा गमट यनवा	मामा गांव जा रहे है।
मिनिहा गेदर एनवा	आदमी घर आ रहा है।
नैन्दा एहे इन्नवा	मामी वहां है ?
पुता पासलट यनवा	बेटा स्कूल जा रहा है।
दुव पाडम करनवा	बेटी पढ़ रही है।
में ओवें दरुवा	यह आपका बालक है।
गैंनी वैड करनवा	औरत काम कर रही है।

पाठ—५

प्रश्न

में कुमकद् ?	यह क्या है ?
में पोतकि ।	यह पुस्तक है ।
ऐ पोत कोहेद ?	वह किताब कहां है ?
ऐ पोत मेतनय ।	वह पुस्तक यहां है ।
ओरलोसुव कोहेद ?	घड़ी कहां है ?
ओरलोसुव मेसय उडय ।	घड़ी मेज पर है ।
में मोनवाद ?	यह क्या है ?
में मल्य ।	ये फूल हैं ।
ऐ मल गसे अंत ।	वे फूल पेड़ में है ।
ऐ कवुद ?	वे कौन है ?
ऐ माला सह् जयनतय ।	वे माला और जयन्त है ।
पैंन सह् पोत कोहेद ?	कलम और किताब कहां हैं ?
पैंन सह् पोत पेट्टियेय ।	कलम और किताब डिब्बे में है ।
एहि तिबेन्ने मोनवाद ?	वहां क्या है ?
एहि गेदरक अंत ।	वहां एक घर है ।
में कामरये इनूने कवुद ?	इस कमरे में कौन रहते हैं ?
में कामरये सहोदरयिन् देदेनेक् सिटिति ।	इस कमरे में दो भाई रहते हैं ।

कुमक्द् ?	=क्या है ?	सह	=और
पोतकि	=एक किताब	गेद्रक्	=एक घर
ओरलोसुव	=घड़ी	कामरये	=कमरे में
मल् (य)	=फूल (है)	सहोदरयिन्	=भाइयो
जयन्त (य)	=जयन्त (है)	देदेनेक	=दो(प्राणी वाचक)
पेट्टियेय	=डिब्बे में	सिटिति	=है।
तिबन्नेनेय	=है ? (अप्राणी वाचक)	इन्ने (य)	=है, रहते हैं

पाठ—६

समानार्थक तथा विरुद्धार्थक विशेषणों को नीचे दिया है। हिन्दी और सिंहल में बहुत से समान शब्द भी हैं।

ADJECTIVES	विशेषण
होन्द = अच्छा	ऊष्ण = गरम
नरक = बुरा	दुप्पत् = गरीब
लस्सन = सुन्दर	पोहोसत् = अमीर
तित्त = कड़वा	गोलु = गुंगा
पैंनिरस = मीठा	बिहिरि = बहरा
अँम्बुल = खट्ठा	अमारु = कठिन
लुनुरस = नमकीन	पहसु = आसान
अन्धया = अन्धा	अवंक = ईमानदार
लाव; लाभ = सस्ता	वंक = बेइमान
पिरिसिदु = साफ	बोरु = झूठ
अपिरिसिदु = गन्दा	अँत्त = सही, सत्य
कपटि = चालाक	अमु = कच्चा
शीतल = ठंडा	इदुणु = पक्का
सामान्य = साधारण	वेंलुणु = सूखा
इक्मनट = जल्दी	उस = ऊंचा

हेमिन् = धीरे
दैन = अभी
पसुव = बाद में
समान = समान्
अ-समान = असमान
गैंलपेन = उपयुक्त
नो गैंलपेन = अनुपयुक्त
मोड़ = मूर्ख
बुद्धिमन् , पंडित = बुद्धिमान
निद्हस् = स्वतंत्र
बैंदि = बंधनयुक्त
अलुत = ताजा, नया
परण = पुराना
पिरुण = भरपूर
णय = उधार
सतुट = खुशी, प्रसन्नता
अमारु = कठोर, कठिन
बर = भार, भारी
सैहैल्लु = हल्का
कोमल = कोमल
कणगाटु = दुखी
नूतन = आधुनिक
तरुण = तरुण
महलू = बूढ़ा
स्थिर = पक्का
शिष्ट = सभ्य, शिष्ट

मिटि = नाटा
कन्द = पहाड
बैंउम = ढाल
उड = ऊपर
बिम = नीचे
बड़गिन्न = भूख
पिपासय = प्यास
असनीप = बीमारी
उवमना = आवश्यक
नुउवमना = अनावश्यक
लोकु = बड़ा
कुड़ा-छोटा
अन्तिम = अन्तिम
पसुवी = देर से, पीछे
अलस = आलसी
सिहिन् = दुबला, पतला
बुरुल = ढ़ील
पिन्वत् = पुण्यवान
पिसूसा = पागल
उदासीन = उदासीन
प्रवेसम = सुरक्षित
सामान्य = सीधा
तनिव = अकेला
एकतुव = एक होकर
महन्सि = तका हुआ
अँनूत = सच

तमागे = स्वकीय
शान्त = शान्त
सूदानम् = तैयार
तद = कड़ा
महत = मोटा
हरि = ठीक
वटकुरु = गोल
गैंमि = देहाती
नागरिक = नागरिक, शहरी

वोरु = झूठ
वैंडकट ऑति = काम का, उपयोगी
वैंडकट नैति = निकम्मा; अनुपयोगी
तेत = गीला
सियल्ल = सब
वैंरदि = गलत
वनचर = जंगली
व्यर्थ = व्यर्थ
मिहिरि = मधुर

पाठ—७

पाट = रंग

कलु—काला
निल् = नीला
सुदु = सफेद
रतु = लाल
कह = पीला
कोल = हरा
दम् = बैंगनी
दुम्बुरु = भूरा
रोस = गुलाबी
तैम्बिलि = नारंगी
ला पाट = हल्का रंग
तद पाट = गहरा रंग

सतिये दवस्
(सप्ताह के दिन)

इरिदा = रविवार
सन्दुदा = सोमवार
अन्गहरुवादा = मंगलवार
बदादा = बुधवार
ब्रहस्पतिन्दा = गुरुवार
सिकुरादा = शुक्रवार
सेनसुरादा = शनिवार

मास दोलह-बारह महिने

जनवारी = जनवरी
पेब्ररवारि = फरवरी
मारतु = मार्च
अप्रेल = अप्रेल

कालय-समय

अवुरुद्द = साल
मासय = महिना
सतिय = सप्ताह
दवस = दिन

मैयि = मई
जूनि = जून
जूलि = जुलाई
अगोस्तु = अगस्त
सेप्तेम्बर = सितम्बर
ओक्तोबर = अक्टूबर
नोवेम्बर = नवम्बर
देसेम्बर = दिसम्बर
वक मस = चैत्र
वेसक मस = वैशाख
पोसोन मस = ज्येष्ठ
.ऐसळ मस = आषाढ़
निकिणी मस = श्रावण
बिनर मस = भाद्रपद
वप् मस = अश्विन
इल् मस = कार्तिक
उंदवप् मस = मार्गशीर्ष
दुरुतु मस = पौष
नवम् मस = माघ
मैदिन मास = फाल्गुन

पैय = घण्टा
मिनित्तुव = मिनिट
तत्परय = सेकेंड
पान्दर = सवेरे, भोर
उदे = सवेरे
दवल = दिन
रैय = रात्रि
हवस = शाम
इर मुदुन् कालय = दो पहर
सतिदेक कालय = पक्ष, दो सप्ताह
वर्षा कालय = वर्षा ऋतु
ऊष्ण कालय = गरम ऋतु
शीत कालय = शीत ऋतु
पसलोस्वक = पूर्णिमा
अमावक पोय = अमावस्या
अद = आज
हेट = आगमी काल
ईये = गत काल
अनिद्दा = आगामी परसों
पेरेदा = गत परसों

पाठ—८

वाक्य सैंदीम = वाक्य बनाना

सुशील होन्द लमयेकि ।	सुशील एक अच्छा लड़का है ।
मम एक क्रीडकयेकि ।	मैं एक खिलाड़ी हूँ ।
नुम्ब शिष्ययेकुद ?	क्या तुम विद्यार्थी हो ?
ओवुन् बोहोम दुप्पतय ।	वे बहुत गरीब हैं ।
ओहु मगे (यहलुवेकि) मित्रयेकि	वह मेरा एक मित्र है ।
वैडकारया अवंक कनेक विय ।	नौकर ईमानदार था ।
रजू गे पुत्रया वीरवन्तयेक विय ।	राजपुत्र वीर थे ।
ऐ बल्ला कलुपाटय ।	वह कुत्ता काला है ।
नुम्ब असनीपयेनुद ?	क्या तुम बीमार हो ?
कुरुल्लन कूडुवे सिटिया ।	चिड़ियां घोसले में थीं ।
ओहु एक रन् करुवेकि ।	वह एक सुनार है ।
ओबे गेदर कोहेद ?	आपका घर कहां है ?

इन शब्दों से वाक्य बनाइये—

होन्द = अच्छा	वीरवन्तया = वीर
क्रीडकया = खिलाड़ी	बल्ला = कुत्ता
शिष्यया = विद्यार्थी	असनीप = बीमार
दुप्पत् = गरीब	कुरुल्ला = चिड़िया
यहलुवा = मित्र	कूडुव = घोंसला
अवंक = ईमानदार	रन्करु = सुनार

पाठ—९

"नहीं" शब्द का प्रयोग

रामु अवंक ळमयेक नोवेयि (नोवे)	रामु ईमानदार लड़का नहीं है।
ओहु अलस केनेक नोवे	वह आलसी नहीं है।
ओव धनवतेक नोवेयिद? (नोवेद ?)	क्या आप अमीर नहीं हैं ?
मोकद गोपाल अवंक मिनिहेक नोवेद ?	क्या गोपाल ईमानदार आदमी नहीं है ?
ओव तवम कैंम कैंवे नैद्द ?	क्या आप अभी तक खाना नहीं खाये हैं ?
ओहु नुम्वे सहोदरयेक नोवेद ?	क्या वह तुम्हारा भाई नहीं है ?
अैय वैंडट दक्सियक नोवीय।	वह काम में चतुर नहीं थी।
मम दैन असनीपयेन नोवेमि।	मैं अब बीमार नहीं हूँ।
प्रश्न अमारु नोवीय।	प्रश्न कठिन नहीं था।
अम्ब अैम्बुल नोवीय।	आम खट्टे नहीं थे।
मे मोनरा लसून नैद्द ?	क्या यह मोर सुन्दर नहीं है ?
अैय गेदर नोसिटियेद ?	क्या वह घर में नहीं थी ?
ओवे तातता गेदर नैद्द ?	क्या आप के पिता जी घर में नहीं है ?
ओहु सोरेकु नोवीय।	वह चोर नहीं था।

इन शब्दों से वाक्य बनाइये—

अलस = आलसी	कैंवा = खाया
मोकद = क्या ?	दकूस = चतुर
कैंम = खाना	नोवेंद ? क्या नहीं है ?
अमारु = कठिन	अैंग्बुल = खट्टा
अम्ब = आम	सोरा = चोर

पाठ—१०

विभक्ति

जिन प्रत्ययों का पर-संयोग करने से नाम पदों के कर्ता, कर्म आदि अर्थों का पृथक-पृथक विभाजन हो जाता है, वे प्रत्यय "विभक्ति-प्रत्यय" कहलाते हैं।

प्रथमा विभक्ति

प्रथमा विभक्ति एक वचन में अ, आ, उ, ए, अक् तथा एक् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। बहुवचन में उ, ओ, हू तथा वल प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

कर्ता, कर्म, करण आदि विभक्तियों के प्रत्ययों से जिन विशिष्ट अर्थों का बोध होता है, उनमें से किसी एक अर्थ को प्रकट न करके जब उस नाम पद मात्र का उल्लेख किया जाता है, तब प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है।

उदाहरण—एक वचन :

अ—	मल लसूसनयि।	पुष्प सुन्दर है।
आ—	अमूमा बत् उययि।	माँ चावल पकाती है।
उ—	कुमरु रज करयि।	कुमार राज्य करता है।
ए—	कळें बिन्दुणांय	घड़ा फूट गया।

अक्—	भिक्षुवक् पाडम् करयि	एक भिक्षु पढ़ता है।
एक—	ळमयेक् अन्डयि	एक लड़का रोता है।

बहु वचन :

उ—	मोणरु नटति	मोर नाचते हैं।
ओ—	गोवियो वैड करति	किसान काम करते हैं।
हु—	ओवुहु उगनिति	वे पढ़ते हैं।
वल्—	गेवल् सुन्दरय	घरें सुन्दर हैं।

प्रथमा विभक्तयन्त पुल्लिग में शब्द से परे, तेमें, तोम स्त्रोलिंग एकवचनार्थ जुड़ता है तथा "तुमु" दोनों लिंगों में एक वचन से परे तोम; तोमां जुड़ता है।

कर्म विभक्ति

किसी भी क्रिया के सम्बन्ध में कौन, किसने आदि प्रश्नों का जो उत्तर मिलता है, उसे कर्ता कहते हैं। उसी प्रकार क्या—किसे, किसको आदि प्रश्नों का जो उत्तर मिलता है उसे "कर्म" कहते हैं।

उदाहरण :

"मिनिहा गस कपयि।" (आदमी पेड़ काटता है।)

गस (पेड़) कर्म है। क्रिया को लेकर जब यह प्रश्न पूछा जाता है कि "क्या काटता है" तो उसका एक ही उत्तर मिलता है "पेड़"।

ळमया पोत कियवयि	लड़का किताब पढ़ता है।
अम्मा दरुवा नलवयि	मां बच्चे को सुलाती है।
औय नगरयट गियाय	वह शहर गयी।

कर्म विभक्ति एक वचन में—अ, आ, उ, हु, ट, अट, अक, अक् प्रत्ययों का प्रयोग होता है और बहु वचन में निम्न प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

मिनिहा बल्लेकु मैरीय	आदमी ने कुत्ते को मार डाला है।
अपि मन्दिरयट यमु	हम लोग मन्दिर चलें।
वेलेन्दों बडु विकुणाति	व्यापारी लोग माल बेचते हैं।
गुरुवरु सिल्प उगन्वति	अध्यापक लोग शिल्प देते हैं।

कर्तृ विभक्ति

स्वयं अथवा किसी के द्वारा कार्य करने-कराने वाला कर्ता कहलाता है। कर्ता के तीन प्रकार माने गये हैं। शुद्ध कर्ता, हेतु कर्ता, कर्म कर्ता।

कर्ता विभक्ति एक वचन में—अ, आ; उ, हु, अकु, अक् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। तथा बहु वचन में अन्, आन, उन्, न, न्, नन्, नट, वल् प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण :

मामा दुन् पैन अगेयि।	मामा के द्वारा दी हुई कलम कीमती है।
वैस्स निसा पार वैसेयि।	वर्षा के कारण रास्ता बन्द हो जाता है।
अक्का गन मालय लस्सनयि	दीदी के द्वारा ली गयी माला सुन्दर है।
दिवियन मैरू गवयो बोहोंयि।	चीतों के द्वारा मारी गई गायें बहुत हैं।

गुरुळान गत् नयिन् दुटिमु ।	गरुड़ों के द्वारा गृहीत सापों को देखा
ओयवल् गला कुवुँर यटवोय ।	नदी बहकर खेतों को डुबो देती है

करण विभक्ति

करण विभक्ति का प्रयोग कालार्थ, मार्ग के अर्थ; हेतु के अर्थ तथा विशेषणार्थ आदि में प्रयोग होते हैं।

उदाहरण :

देदिनकिन पासै.लट नोगियेय ।	दो दिनों से स्कूल नहीं गये ।
टिक दुरकिन गमन निम केलेमि ।	थोड़ी दूर जाकर यात्रा समाप्त की
ओहु आवेन मम गियेमि ।	उसके आने से मैं गया हूँ ।
मम .पैनसलेन् लियमि ।	मैं पेन्सिल से लिखता हूँ ।

सम्प्रदान विभक्ति

जिस शब्द से किसी से कुछ प्राप्त करने का बोध होता है उस शब्द के आगे सम्प्रदान विभक्ति के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

अट, आट, उट, ट, हट, हुट प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। तथा बहु वचन में ये प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

अन्ट, अनट, आनट, अन्हट, उन्ट, उनहट, नट न्हट नट, नन्ट तथा वलट ।

यदिनट, (याचकों को) गम् वैसियनट (ग्राम वासियों को) आनट कोवुलानट (कोयलों को) गोवियंहट (किसानों को) मल वलट, (फूलों को)

उदाहरण :

मम गसट पोर दैमुवेमि।	मैंने पेड़ में खाद डाल दी।
तातता दुवट तँग्गक दुन्नेय।	पिता ने बेटी को इनाम दिया था।
दुप्पतुन्ट दन् देनन।	गरीबों को दान दें।
मम हिन्गन्नाट सतयक् दुनिमि।	मैंने भिखारी को एक पैसा दिया।

अवधि विभक्ति

जहां एक वस्तु का दूसरी से अलगाव प्रकट करना हो, अथवा सीमा का उल्लेख करना हो–वहां अवधि विभक्ति के प्रत्यय प्रयुक्त होते है।

गेन् प्रत्यय, करण विभिक्त के सभी प्रत्यय, तथा "न" और "नट" प्रत्यय-द्वय के अतिरिक्त कर्म विभक्ति के सभी प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण :

लेंना अत्तेन पैन्नेंय।	गिलहरी डाल से खूद गई।
मल्ली कलेन वतुर गनियि।	छोटा भाई घड़े से पानी लेता है।
मिनिहा गसेन् वैटी मलेंय।	आदमी पेड़ से गिरकर मर गया।
गसेन् गेडि वैटें।	पेड़ से फल गिरते हैं।
इरेन अपट एलिय लैवें।	सूर्य से हमें किरण मिलती है।

सम्बन्ध विभक्ति

जहां स्वामित्व अथवा सम्बन्ध प्रकट करना हो, वहां सम्बन्ध विभक्ति के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण :

बल्लागें ककुल कैडुणेंय।	कुत्ते का पैर टूट गया।
कुमरुगें कडुव वेंबलिणि।	कुमार की तलवार चमकी।
गैहणियगें अत कैडिणि।	स्त्री का हाथ टूट गया।

आधार बिभक्ति

यदि किसी क्रिया पर कर्ता अथवा कर्म का भार पड़ता हो तो उस समय आधार विभक्ति के प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

आधार-विभक्ति में एक वचन में .श्रै, ऐं, एहि, हि, आदि प्रत्यय तथा बहु वचन में अन्हि तथा वल प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

उदाहरण :

मम पुटुवेहि इन्दगनिमि।	मैं कुर्सी में बैठता (ती) हूँ।
गस्वल मल पिपेयि।	पेड़ों में फूल खिलते हैं।
समनळया मलेहि सिटियि।	तितली फूल में रहती है।

आलपन विभक्ति

किसी को बुलाने अथवा सम्बोधित करने के अवसर पर आलपन विभक्ति का प्रयोग होता है।

आलपन विभक्त्यन्त एक वचन में अ, आ, .श्रै, ए, ओ प्रत्यय तथा बहु वचन में इन, इनि, एन्, एनि, नेन्, नेनि तथा नि प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण :

ळमया मेहे एन्न।	बालक! इधर आओ।
मित्रयिनि मा कियन देय अहन्न।	मित्र! मैं जो कहता हूँ वह सुनें।

अम्मे मट वडगिनियि ।	मां ! मुझे भूख लगी है ।
दरुव ! नुम्ब गियें कोहेद ?	बेटा ! तुम कहां गये हो ?
शिष्ययिनि ! दन्ग नोकरव् !	शिष्यों ! दंगा कत करो ।
मिनिसुनि ! होन्द सिरित् अत् नोहरिव् ।	आदमियों ! अच्छी आदतों का त्याग मत करो ।

आलपन विभक्त्यन्त पद के पहले एम्बा, कोल और है आदि सम्बोधन चिन्ह भी जुड़ते हैं ।

पाठ—११

लिंग भेद

जितने भी प्राणी हैं, वे सामान्य रूप से पुरुष और स्त्री-दो ही है। लेकिन लिंग का विचार करते समय हम जितने "नाम"-पद हैं उन्हें चार भागों में विभक्त करते हैं।

पुरुष लिंग—मिनिहा = आदमी

स्त्री लिंग—स्त्री = औरत

समान लिंग—दरुवा, ळकया, बालक

नपुंसक लिंग—गह, गेय—पेड़, घर

वर्तमान हिन्दी भाषा की ही तरह सिंहल भाषा में भी केवल प्रधान दो ही लिंग माने जाते हैं—पुरुष लिंग और स्त्री लिंग।

पुरुष लिंग	स्त्री लिंग
पिया (पिता)	मव (माता)
सिंहया (सिंह)	सिंहदेन (शेरनी)

समान लिंग	नपुंसक लिंग
दरुवा (संतान)	पोत = पुस्तक
असल् वैसिया = (पडोसी)	कन्द = पर्वत

बिल्कुल भिन्न रूप में पुल्लिग और स्त्री लिंग शब्द बनते हैं।

उदाहरण

पुरुष लिंग	स्त्री लिंग
पिया—पिता	मव—माता
पुता—पुत्र	दुव—बेटा
मल्ली—छोटा-भाई	नंगी—छोटी-बहन
अयिया—बड़ा-भाई	अक्का—बड़ी-बहन
सीया—दादा	आच्ची—दादी
मामा—मामा	.नैन्दा-मामी
बाप्पा—चाचा	पुंचि अम्मा—चाची
बैंना—दामाद	लेलो—पुत्र-वधु
रज—राजा	बिसव—रानी
अश्वया—घोड़ा	वेलम्ब—घोड़ी
गोना—बैल	एलदेन—गाय
कुकुला—मुर्गा	किकिली—मुर्गी
वळला—बिल्ली (नर)	वैळली—बिल्ली (मादा)
ऊरा—सूअर	ईरी—सूअरी
वसूसा—बछड़ा	वैस्सो—बछड़ी
महण—भिक्षु	मेहेणि—भिक्षुणी
महल्ला—बूढ़ा	.मैहैलूली—बूढी
बमुणा—ब्राह्मण	बैमिणी—ब्राह्मणी
बल्ला—कुत्ता	बैल्ली—कुतिया
कोल्ला—लड़का	केलूल—लड़की

पाठ—१२

नाम (पद)

किसी स्थान, व्यक्ति या वस्तु के नाम को "नाम' कहते हैं। नामों के भी पाँच भेद किए जाते हैं।

जाति नाम

मिनिहा - आदमी — कुकुला—मुर्गा

गोना—बैल — ळमया—बालक

द्रव्य नाम

गस—पेड — वतुर—पानी

पुटुव—कुर्सि — वैलि—रेत

गुण नाम

सुदु—सफेद — होन्द—अच्छा

नपुरु—दुष्ट — लसूसन—सुन्दर

उस—लम्बा, ऊंचा — महत—मोटा

क्रिया नाम

दुवन्ना - दौड़ने वाला — हिंगन्नी—मांगने वाली

नटन्ना—नाचने वाला — अन्डन्नी—रोने वाली

संज्ञा नाम

गुणपाल,	कोलम्व,	दिल्ली,
आसियाव,	भारतय,	रमणी।

सर्वनाम

जिस शब्द का सभी के लिए व्यवहार हो अथवा जो किसी "नाम" "स्थान" में प्रयुक्त हो उसे "सर्वनाम" कहते हैं।

उदाहरण

मम—मैं;	ओव—आप
उम्व—तुम;	ओहु—वह
ओवुहु—वे	मोहु—यह।

पाठ—१३

सर्वनाम :—

इस शब्द का व्यवहार सभी के लिए होने से भी इसे सर्वनाम कहते हैं। सभी नामों के स्थान पर व्यवहृत होने से भी इसका नाम "सर्व-नाम" पड़ा है। इस शब्द का प्रयोग तीनों लिंगों में भी प्रयुक्त होते हैं, इसलिए भी इसे सर्वनाम कहलाने का अधिकार है।

सर्वनाम "उत्तम पुरुष", "मध्यम पुरुष" तथा "अन्य पुरुष" इन तीन भागों में विभक्त है।

उदाहरणार्थ :—

उत्तम पुरुष

एक वचन	बहु वचन
मम—मैं	अपि—हम
मा—मैं	अप—हम
मागे—मेरा	अपगे—हमारा

मध्यम पुरुष

एक वचन	बहु वचन
ओव – आप	ओवला—आप लोग
नुव, उम्व– आप	नुम्वला, उम्वला—आप लोग
ओवगे—आप का	ओवलागे—आप लोगों का

अन्य पुरुष

एक वचन	वहु वचन
ओहु, ओं (स्त्री०)—वह	ओवुहु—वे
एय—वह	ऐवा—वे
मेय—यह (द्रव्य)	मेंवा—ये
मोहु—यह (प्राणि वाचक गौरवार्थ)	मोवुहु—ये
ओहुगे—उसका, के, की	ओवुन्गे—उन लोगों का
मो हुगे—इसका	मोवुन्गे—इनका

सर्वनामों के विभिन्न प्रत्यय :—

उत्तम पुरुष

उभयलिंग में व्यवहृत मम "मैं" शब्द—

	एक वचन	बहु वचन
प्रथमा—	मम, मम्	अपि
कर्म—	मा	अप
कर्तृ—	मा विसिन, मविसिन्	अपविसिन
करण—	मा करण कोट	अप करणकोट
	मगेन्, मागेन	अपेन्, अपगेन्
सम्प्रदान—	मट, माहट	अपट, अपहट
अवधि—	मगेन्, मागेन	अपेन्, अपगेन्
सम्बन्ध—	मगें, मागें	अपे, अपगें
आधार—	मा केरेहि, मा केरें	अप केरेहि

मध्यम पुरुष

	एक वचन	बहु वचन
प्रथमा—	ओब	ओबला
कर्म—	ओब	ओबला
कर्तु—	ओब विविसिन	ओबला विसिन
करण—	ओबेन्, ओब करण कोट	ओबलागेन्, ओबला करण कोट
सम्प्रदान—	ओबट, ओबहट	ओबलाट, ओबलाहट
अवधि—	ओबेन्, ओब केरेन	ओबलागेन्, ओबला केरेन
सम्बन्ध—	ओबें, ओबगें	ओबलागें, ओबला अतुरेन
आधार—	ओब केरेहि	ओबला केरेहि

अन्य पुरुष

प्रथमा—	ओहु	ओवहु
कर्म—	ओहु	ओवुन्
कर्तु—	ओहु विसिन्	ओवुन् विसिन्
करण—	ओहु करण कोट	ओवुन् करण कोट
सम्प्रदान—	ओहुट	ओवुन्ट
अवधि—	ओहुगेन्	ओवुन्गेन्
सम्बन्ध—	ओहुगें	ओवुन्गें
आधार—	ओहु केरेहि	ओवुन केरेहि

अप्राणीवाचक नाम

	एक वचन	बहु वचन
प्रथमा—	एय, ऐंक	ऐंवा
कर्म—	एय, ऐंक	ऐंवा

कर्तृ	—एय, ऐंक	ऐंवा
करण	—एयिन्, इन, ऐंकेन	ऐंवायिन्
सम्प्रदान	—एयट, ईट, ऐंकट	ऐंवाट
अवधि	—एयिन, इन, ऐंकेन	ऐंवायिन्, ऐंवा अतुरेन, ऐंवा केरेन
सम्बन्ध	—एहि, ऐंके	ऐंवाये
आधार	—एहि, ऐंके, ऐंकेहि	ऐंवायेहि, ऐंवाये

ऊपर लिखेत अनुसार जिन सर्वनामों का उपयोग दूसरों की चर्चा करने में होता है, वे अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जिन सर्वनामों का प्रयोग सामने उपस्थित व्यक्ति या व्यक्तियों से बात-चीत करने में होता है, वे मध्यम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं। जिन सर्वनामों का उपयोग अपने ही बारे में कुछ कहने में होता है वे उत्तम पुरुष सर्वनाम है।

पाठ—१४

क्रिया पद

किसी व्यक्ति, जानवर अथवा स्थान के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त हो, उसे क्रिया कहते है। वाक्य का मुख्यांश क्रियापद ही होता है। उसके बिना कोई भी विचार प्रकट ही नहीं किया जा सकता। जितने भी क्रिया पद होते है, उनका सम्बन्ध तीन कालों से, तीन पुरुषों से और दो वचनों से होता है।

प्रयोज्य-क्रिया

जहां प्रयोज्य किया की अपेक्षा होती है वहां अकर्मक-क्रिया का रूप ग्रहण कर लेती है।

"ळमया वैड़ करयि" "लड़का काम करता है।" अकर्मक क्रिया है किन्तु "ळमया वैड़-करवयि"—लड़का काम करवाता है" में "ळमया" का कर्म है, "करवयि" प्रयोज्य क्रिया है। प्रयोज्य-क्रिया न रहने पर भी कुछ धातु ऐसे हैं, जिनके दो-दो कर्म होते है।

प्रयोज्य-क्रिया–उदाहरण :—

मिनिहा गस कपयि	आदमी पेड़ काटता है।
मिनिहा गस कपवयि	आदमी पेड़ कटवाता है।
ओहु गोना मरयि	उसने बैल को मारा

ओहु गोना मरवयि	उसने बैल को मरवाया।
मम वैड करमि	मैं काम करता हूँ।
मम ओहु लवा वैड करवमि	मैं उससे काम करवाता हूँ।

असम्भाव्य क्रिया

काल, पुरुष तथा वचन का विचार न करके अनिश्चितार्थ को प्रकट करने वाली क्रिया को असम्भाव्य-क्रिया कहते हैं।

उदाहरण :—

मिनिसुन आवोत् गस् कैपिय हैकियि।	यदि आदमी आयेंगे, तो पेड़ काटे जा सकते हैं।
अम्मा बत् उयन्नेहि नम् मम बत् कन्नेमि।	माँ, भात पकायेंगी तो मैं भात खाऊंगी।

विधि क्रिया

किसी व्यक्ति को कुछ काम करने के लिए कहना विधि-क्रिया है। यह प्रेम पूर्वक भी हो सकता है, अप्रेम(आदेश)पूर्वक भी हो सकता है।

उदाहरण :–

प्रिय विधान

करुणाकर मे लियुम कियवनून।
कृपाकरके यह चिट्ठी पढ़िये।
करुणाकर वाडिवेनून (इन्दगनून)
कृपाकरके बैठिये।
करुणाकर ओब एहाट यनून।
कृपाकरके आप वहां जाइए।

अप्रिय विधान

तों, गेदर दुर्वापिय। तू घर भाग।
तों मेहे एन्ट्र एपा। तू इधर मत आ।
तों कैंम कन्ट एपा। तू खाना मत खा।

आशीर्वाद

तीनों पुरुषों तथा दोनों वचनों में भावी शुभ आकांक्षा प्रकट करने वाली क्रिया को कहते है "आशीर्वाद क्रिया"

उदाहरण---

अपे पक्षयट जयवेवा।	हमारे पक्ष की जय हो !
ओहु बोहों कालयक् जीवत् वेंवा।	वह बहुत समय तक जीवित रहें !

पूर्व क्रिया

एक कर्ता के द्वारा जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ सम्पन्न होती है, तो अन्तिम क्रिया के पूर्व की जितनी भी क्रियाएं होती है, वे सब पूर्व-क्रिया कहलाती हैं।

उदाहरण—

लमया पासैलट गोस् अकुरु इगेन-गनियि	लड़का पाठशाला जाकर अक्षर सीखता है।
लमया का-वी अैन्द-पैलैन्द पासैलट गियेय।	लड़का खा-पीकर, पहन-सजकर पाठशाला गया।
ओहु अलिया दैक बय वी कै गैसुवेंय।	वह (उसने) हाथी को देख डर-कर चिल्लाया।

मिश्र-क्रिया

एक क्रिया दूसरी क्रियाओं के साथ मिश्रत होकर क्रियान्वित होती है तो वह मिश्र-क्रिया कहलाती है। "केल्ल अन्डमिन कताकरयि" लड़की रोती हुई बोलती है"। यहां दो क्रियायें एक साथ हो जाती हैं। पहली क्रिया दूसरी क्रिया के साथ साथ हो जाती है। इसलिए पहली क्रिया को मिश्र-क्रिया कहते हैं।

उदाहरण—

नैट्टुवः सिन्दु कियमिन्, सिना-सेमिन्, उड पनिमिन्, सतुटिन् नटयि।	नाचनेवाला गाना गाते, हँसते, ऊपर कूदते हुए खुशी से नाचता है।

पाठ—१५

निपात और उपसर्ग

निपात—

नाम, क्रिया आदि के आरम्भ में, बीच में तथा अन्त में आकर नाना प्राकर के अर्थ प्रकट करने वाले पदों को "निपात" कहते हैं। "निपात" का अर्थ ही बीच में आकर जुड़ जाना है।

उदाहरण--मिस, हैर (EXCEPT) अतिरिक्त

मम पान् मिस वेन किसिवक् नोकमि।	मैं डबल रोटी के अलावा कुछ नहीं खाता।
ओव हैर अनिन अयट मम कैंमतियि।	आप के अतिरिक्त दूसरों को मैं पसन्द करता हूँ।

विसिन्, लवा—द्वारा

मविसिन् पोत लियन लदि।	मेरे द्वारा किताब लिखी गयी।
गैंणी विसिन् ळमया लवा बड़ु गेन्यनलदि।	स्त्री ने लड़के के द्वारा सामान मंगवायी।

करण कोट, गेन—द्वारा

एलदेन (करणकोट) गेन अपट किरि लेंवें।	गाय से हम लोगों को दूध मिलता है।

निसा, बैविन्—के कारण

वैस्स निसा अपि गमन कल् दैमीमु।	वर्षा के कारण हम लोगों ने यात्रा को स्थगित किया।
मम दुप्पत् वैंविन ओवुहु मट णय नोदेति।	मैं गरीब हूँ, इसिलिए वे मुझे ऋण नहीं देते।

सन्दहा, उदेसा, पिनिस—FOR, वास्ते

मम दुप्पतुन् सन्दहा दन् देमि।	मैं गरीबों के लिए (को) दान देता हूँ।
मा उदेसा प्रार्थना करन्न।	मेरे लिए प्रार्थना करिए।
अम्मा दर पिणिस कैलयट गियाय।	मां लकडी लाने के लिए जंगल गयी।

तुरु, तेक, दक्वा—TILL तक

एलिवन तुरु ओवुहु सेल्लम् कलोय।	सुबह तक वे खेले थे।
अपि दिनन तेक् सटन करमु।	हम जीतने तक लडेंगे।
कोलम्ब सिट नुवर दक्वा पार होन्दया।	कोलम्बु से नुवर तक रास्ता अच्छा है।

केरेहि—IN, में, प्रति

मा केरेहि विश्वासय तवन्न।	मुझ पर विश्वास रखिए।

मेन, से, वैनि, वागे—LIKE, AS, जैसे, तरह

ओहु तरहेन् मेन् मा देस बलयि।	वह गुस्सा से जैसे मेरी तरफ देखता है।
पिस्सकु से कता नोकरन्न।	पागल की तरह बात मत करिए।
गान्धी, नेहरू वैनि जन नायकयिन् अद नैत।	गान्धी नेहरू जैसे जन (नेता) नायक आज नहीं है।

पमण, तरम, वितर—ABOUT, लगभग, करीब

ऐं लोय अडि पहक् पमण दिगय ।	वह लकड़ी पांच फिट के करीब लम्बी है ।
ओहुट अतेकु तरम् शक्तिय अत ।	उसे हाथी की तरह शक्ति है ।
किलो देकक् वितर हाल् मम दुनिमि ।	दो किलो के लगभग चावल मैंने दी ।

वेत, करा—TO, NEAR, तक, पास

ओहु मा वेत पणिविडयक् गेन आवेय ।	वह मेरे पास एक सन्देश लेकर आया ।
दरुवा मव करा गियेय ।	बच्चा मां के पास गया ,

सम्बन्ध वाचक निपात (CONJUNCTIONS)

सह, हा, द, त्—AND. और, तथा, भी

गुरुवरया सह शिष्यया पासैल्यति ।	गुरु और शिष्य स्कूल जाते हैं ।
ओहु हा मम वैड करमु ।	वह और मैं काम करते हैं ।
ळमयाद् वैललीद सेल्लम करति ।	लडका और बिल्ली खेलते हैं ।
पियात् पुतात कुम्बुरे वैड करति ।	पिता भी पुत्र भी खेत में काम करते हैं ।

समन्ग, कैटुव, एकक—WITH. से, के साथ

लीला, चम्पा समन्ग अविदिनट यथि ।	लीला चम्पा के साथ घूमने जाती है ।
ओव केटुव मम गमट यननेमि ।	आप के साथ मैं गांव जाऊंगा ।
मव दुव एकक् कैम उयथि ।	मां बेटी के साथ खाना पकाती है ।

नमुत्—BUT. लेकिन

मम कैम कैं नमुत् वतुर नोवी- वेमि ।	मैंने खाना खाया लेकिन पानी नहीं पी ।

हो—OR या, अथवा

ओव हों मम हो गेदर यायुतुय ।	आपको या मुझे घर जाना उचित (चाहिये) है ।

नोहोत—OR. अर्थात्

मम दिल्ली नोहोत् भारतये अगनुवरट यन्नेमि ।	मैं दिल्ली अर्थात् भारत की राजधानी (अग्रनगर) जाऊँगा ।

नम्—तो

ओव एनतें नम ममत् एनेनेमि ।	आप आयेंगे तो मैं भी आऊंगी ।
पोत गेनावें नम् कियवमि	किताब लाये हों तो पढ़ूंगा ।

पद पूर्ति करने वाले निपात

दँन्—अभी, अब

दैन ओव गेदर यन्न ।	अभी आप घर जाइए ।

अद—आज ।

अद वैड हुन्गक् करनून तिबेनवा ।	आज बहुत काम करना है ।

एदा—उस दिन

एदा मम होन्दटम तेमुनेंथ ।	उस दिन मैं बहुत भीग (गयी) गया ।

वहा, तुरन्त—जल्दी

वहा गेदर दुवन्न ।	जल्दी घर दौडिए ।

नितर—निरन्तर, अकसर, प्रायः

ओहु नितर असनीप वेयि ।	वह प्रायः बिमार होता है ।

उपसर्ग

उदाहरण—

किसी पद के आरम्भ में प्रयुक्त होने वाले शब्दांश को उपसर्ग कहते हैं।

प	+	बल	=	पबल	=	प्रबल, व्याप्त
पर	+	देशय	=	परदेशय	=	विदेश
अव	+	लच्छण	=	अवलच्छण	=	अवलक्षण
स	+	दोस	=	सदोस	=	दोष रहित
अनु	+	बल	=	अनुबल	=	सहारा
नि	+	रोगी	=	निरोगी	=	रोग रहित
दु	+	दन	=	दुदन	=	दुर्जन
वि	+	रूप	=	विरूप	=	विरूप
अ	+	कीकरू	=	अकीकरू	=	अवज्ञाकारी
अदि	+	करण	=	अधिकरण	=	अधिकरण
सु	+	पिपि	=	सुपिपि	=	अच्छी तरह खिला हुआ
उ	+	गैनुम	=	उगैनुम	=	सीखना
अबि	+	मानय	=	अबिमानय	=	अभिमान्
परि	+	सुदु	=	पिरिसुदु	=	साध
उप	+	करण	=	उपकरण	=	चीजें
अप	+	कीरतिय	=	अपकीर्तिय	=	अपकीर्ति
पस्	+	विसि	=	पस्विसि	=	पच्चीस
पिलि	+	गत	=	पिलिगत्	=	स्वीकृत, मान लिये गये
अति	+	गैम्बुरू	=	अतिगैम्बुरू	=	बहुत गहरा
पि	+	दीम	=	पिदीम	=	पूजा

पाठ—१६

काल TENSE

वर्तमान काल—

मम गस कपमि	मैं पेड़ काटता हूँ।
ओव गस कपयि	आप पेड़ काटते हैं।
ओव गस कपयि	वह पेड़ काटता है।
ळमया गस कपयि	लड़का पेड़ काटता है।

अतीत काल—

मम पाडम केलेमि	मैंने पाठ पढ़ा था।
ओव पाड़म केरुवेहि	क्या आपने पाठ पढ़ा था।
ओहु पाडम केलेय	उसने पाठ पढ़ा था।
ळमया पाडम केलेय।	लड़के ने पाठ किया था।
अपि पाड़म केलेमु।	हमने पाठ पढ़े थे।

अनागत काल—

मम गमट यन्नेमि	मैं गांव जाऊँगा।
ओब गमट यन्नेहि	क्या आप गांव जायेंगे।
ओहु गमट यथी	वह गांव जाता है।
ळमया गमट यन्नेय	लड़का गांव जाता है।
अपि गमट यन्नेमु	हम गांव जाते हैं।

पाठ—१७

विरुद्धार्थ पद—

			अर्थ
कैमति	:	अकैमति	पसन्द —नापन्द
कीकरु	:	अकीकरु	आज्ञाकारी—अनाज्ञाकारी
करुणावन्त	:	अकरुणावन्त	दयालु —निर्दयी
क्रमिक	:	अक्रमिक	नियमित —अनियमित
ज्ञानवन्त	:	अज्ञानवन्त	ज्ञानी —अज्ञानी
नियम	:	अनियम	नियत —अनियत
पक्षपात	:	अपक्षपात	वफादार —बेवफादार
दक्ष	:	अदक्ष	होशियार—बेहोशियार
पहसु	:	अपहसु	आसान —मुश्किल
प्रमाण	:	अप्रमाण	सीमित —असीमित
पैहपत्	:	अपैहपत्	अच्छा —बुरा
युक्तिय	:	अयुक्तिय	न्याय —अन्याय
वासिय	:	अवासिय	लाभ —हानि
विश्वासय	:	अविश्वासय	विश्वास —अविश्वास
गुण	:	अवगुण	गुण —अवगुण
गैम्बुरु	:	नोगैम्बुरु	गहरा —उथला
रस	:	नीरस	रुचिकर—अरुचिकर

सिंहल शब्द			अर्थ (हिन्दी)
बय (भय)	:	निर्भय	डरपोक —बहादुर
लक्षण	:	अवलक्षण	सुन्दर —असुन्दर
सरु	:	निसरु	सार —निस्सार
वॅरदि	:	निवॅरदि	गलत —ठीक
सतुट	:	असतुट	सन्तुष्ट —असन्तुष्ट
वॅदगत्	:	नो.वॅदगत्	महत्वपूर्ण—अमहत्वपूर्ण
उवमना	:	नुवुवमना	आवश्यक—अनावश्यक
हॅकि	:	नोहॅकि	समर्थ —असमर्थ
दन्ना	:	नोदन्ना	ज्ञात —अज्ञात
वटिना	:	नोवटिना	मूल्यवान —अमूल्यवान
अलुत्	:	परण	नया —पुराणा
अन्दुरु	:	आलोक	अंधेरा —प्रकाश
अतीत	:	वर्तमान	अतीत —वर्तमान्
स्थिर	:	अस्थिर	स्थिर —अस्थिर
अवश्य	:	अनवश्य	आवश्यक—अनावश्यक
अरिनवा	:	वहनवा	खोलना —बंद करना
आदरय	:	अनादरय	आदर—अनादर
आशीर्वादय	:	शापय	आशीर्वाद—श्राप
उदय	:	हवस	सुबह—शाम
उस	:	मिटि	ऊंचा—नाटा
कडिसर	:	कम्मैलि	चुस्त—सुस्त
महत	:	केट्टु	मोटा—पतला
तरुण	:	महलु	तरुण—वृद्ध
तद	:	बुरुल्	तंग—ढीला
तात्ता	:	अम्मा	पिता—माता

प्रेम	: पिळिकुल	प्रेम—घृणा
अय्या	: अक्का	बड़ा भाई=बड़ी बहन
मल्ली	: नंगी	छोटा भाई—छोटी बहन
बाप्पा	: पुंचि अम्मा	चाचा—चाची
मामा	: नैन्दा	मामा—मामी
किरि अत्ता:	किरि अम्मा	दादा—दादी
दवल्	: रैं	दिन—रात
मुल	: अग	आदि—अन्त
परण	: नवीन	पुराना—आधुनिक
प्रश्नय	: उत्तरय	प्रश्न—उत्तर
पुता	: दुव	बेटा—बेटी
पुरुषया	: स्त्रिय	पति—पत्नि
मोलोक्	: तद	मृदु—कठोर
मिहिरि	: अमिहिरि	मीठा—कड़ुवा
उड	: यट	ऊपर—नीचे
रज	: बिसव	राजा—रानी
लोकु	: कुडा	बड़ा—छोटा
शक्तिमन्	: दुर्बल	मजबूत—कमजोर
शीत	: ऊष्ण	ठण्डा—गरम
वियलि	: तेत	सूखा—गीला
सुदु	: कलु	सफेद—काला
सतुरा	: मितुरा	शत्रु—मित्र

पाठ—१८

में मिनिहेकि।	यह आदमी है।
मिनिहा मेतनय।	आदमी यहां है।
ए' गैंणु ळमयेकि।	वह लड़की है।
गैंणु ळमया एतनय।	लड़की वहाँ है।
अपि देदेनेकि।	हम दो हैं।
में पोडि कोलयकि।	यह छोटा पत्ता (कागज का टुकड़ा) है।
मेंवा पोडि कोलय।	ये छोटे पत्ते हैं।
में मेंसयकि।	यह मेज है।
में पोतकि।	यह पुस्तक है।
में पुटुवकि।	यह कुर्सी है।
में पोत मेतनय।	यह पुस्तक यहाँ है।
ऍ पुटुव एतनय।	वह कुर्सी वहां है।
पोंत मेंसय उड़ अैत।	पुस्तक मेज पर है।
मेंसय पोलव उड़ अैत।	मेज जमीन पर है।
पुटुवन् पोलव उडय।	कुर्सी भी जमीन पर है।
पुटुव मेंसय लन्गय।	कुर्सी मेज के पास है।
मिनिहा मेंसय लन्गय।	आदमी मेज के पास है।
मम मेतनय।	मैं यहाँ हूँ।
नुम्ब कोहेद ?	तुम कहाँ हो ?

मम गेदर वेमि ।	मैं घर में हूँ ।
तुम्ब्र वासय करन्ने कोहेद ?	तुम कहाँ रहते हो ?
ओहु पिरिमि ळमयेकि ।	वह लड़का है ।
ओहु कडें अैत ।	वह दुकान में है ।
अैय कवुद ?	वह कौन है ?
अैय मगें नंगीय ।	वह मेरी छोटी बहन है ।
अैय गमें वासय करयि ।	वह गांव में रहती है ।
में गेदर कि ।	यह एक घर है ।
में गेदर जनेंलयकि ।	यह घर की खिड़की है ।
मेंवा गेदर दोरवलूय ।	ये घर के दरवाजे हैं ।
में पारकि ।	यह सड़क है ।
जनेलय अैरलाय ।	खिडकी खुली है।
दोर वहलाय ।	दरवाजा बंद है ।
पार अयिने गेदर अैत ।	सडक के किनारे घर है
में रामगे गेदरय ।	यह राम का घर है
अर बलन्न, राम ओहुगें गेदर यनवा ।	वह देखो, राम अपने घर जा रहा है ।
ओहु दैन गेदर दोर लन्गट गिया ।	वह अब घर के दरवाजे पर पहुँचा ।
ओहु दैन गैं अैतुलट गिया ।	वह अब घर के अन्दर चला गया ।
ओहु अलूमारिय लन्ग सिटी ।	वह अलमारी के पास है ।
अलूमारिये पोत् तिवें ।	अलमारी में पुस्तकें हैं ।
राम विसिन् एं पोत गनु लैवें ।	राम उन पुस्तकों को उठाते है ।
नैवत पोत अलूमारियें तवयि ।	फिर पुस्तकें अलमारी में रखता है ।
दैन एंवा अलूमारियें वेयि ।	अब वे अलमारी में है ।

पाठ—१९

मे अॆछ्य	यह आंख है।
अपि अॆसॖवलिन वलनवा।	हम आंखों से देखते हैं।
मे कनय।	यह कान है।
अपि कनॖवलिन अ़छनवा।	हम कान से सुनते हैं।
अपि नासयेन सुवन्द वलनव।	हम नाक से सूंघते हैं।
कट कताकिरीम सन्दह्ाय।	मुख बोलने के लिए हैं।
ओलुवे केसॖ तिवेनवा।	सिर पर बाल है।
केसॖ कलुपाटयि।	बाल काले होते हैं।
अपि अतॖवलिनॖ वॆड करनवा।	हम हाथ से काम करते हैं।
अपि ककुलॖवलिनॖ अॆविदिनवा।	हम पैरों से चलते हैं।
अते अॆन्गिलि पहकॖ तिवेनवा।	हाथ में पांच उंगलियां होती हैं।

पाठ—२०

ऍं अपें गुरुतुमाय ।	वे हमारे अध्यापक है ।
ओब यन्नें कोहेद ?	आप कहां जा रहे हैं ?
मम पासैलट यनवा ।	मैं स्कूल जा रहा हूँ ।
अपि इगेनगन्नें मोनवाद ?	हम क्या सीखते हैं ?
अपि सिंहल इगेनगन्नवा ।	हम सिंहल सीखते हैं ।
ओब सिंहल अकुरेन् लियन्न ।	आप सिंहल कत्तरों में लिखिये ।
अपि सिंहलेन् कताकरनवा ।	हम सिंहल में बोलते हैं ।
सिंहल इगेनगन्न लेंसियि ।	सिंहल सीखना आसान है ।
ओब सिंहल सिंदुवक् गयन्न ।	अ.प एक सिंहल गीत गाइये ।
ओब हिन्दियेन कताकरन्न ।	आप हिन्दी में बोलिए ।
मम सिंहल पाडम कियवमि ।	मैं सिंहल पाठ पढ़ रहा हूँ ।
ओवुन् वसयेन् गेदर यति ।	वे बस से घर जाते हैं ।
ओब श्रीलंकावट यनन कैमतिद ?	क्या आप श्रीलंका जाना चाहते हैं ?
श्रीलंकाव इता कुडा रटकि ।	श्रीलंका एक छोटा देश है ।
में रट बोहोम लसूसनयि	यह देश बहुत सुन्दर है ।
इन्दियाव इता विसाल रटकि ।	भारत एक बड़ा देश है ।
श्रीलंकावें अगनुवर कोलम्बय ।	श्रीलंका की राजधानी कोलम्बवो है ।

पाठ—२१

सुनिल् ओबला सहोदरयिन् कीदेनेकुद ?	सुनिल, तुम कितने भाई हो ?
अपि सहोदरयिन तिदेनेकि ।	हम तीन भाई हैं ।
एक सहोदरयेक् मट वैडिमल्, एक्केनेक् मट बालयि ।	एक भाई हमसे बड़े है, एक हम से छोटे है।
ओवें अयियागें नम कुमक्द ?	आपके बड़े भाई का नाम क्या है ?
ओहुगें नम "सरत्" य ।	उनका नाम सरत है ।
मगें मल्लीगें नम वसन्त य ।	मेरे छोटे भाई का नाम वसन्त है ।
ओहु हिन्दी दन्नवाद ?	क्या ? उनको हिन्दी आती है ?
ओहु सिंहल टिक-टिक दन्नवा ।	उसे थोडी - थोडी सिंहल आती है ।
ओवें अयिया हिन्दी दन्नवाद ?	आपके बड़े भाई को हिन्दी आती है ?
ओवु; ओहु हिन्दी होन्दट दन्नवा ।	जो हाँ ! उनको हिन्दी अच्छी तरह आती है ।
ओव् सिंहल होन्दट दन्नवाद ?	क्या, आपको सिंहल अच्छी तरह आती है ?

ओव्, मम सिंहल होन्दट दन्नवा ।	जी हाँ, मुझे सिंहल अच्छी तरह आती है ।
ओबे मल्ली सिंहल दन्नवाद ?	आपका छोटा भाई सिंहल जानता है ?
.नैह, ओहु सिंहल होन्दट दन्नें .नैह ।	जी नहीं, उसे सिंहल अच्छी तरह नहीं आती है ।
ओहुट सिंहल उगन्वन्नें कवुद ?	उसे सिंहल कौन पढ़ाता है ?
ओहुट पियसेन महत्मया सिंहल उगन्वनवा ।	उसे पियसेन महाशय सिंहल पढ़ाते हैं ।
मम .दैन-दैन् सिंहल इगेन-गन्नवा ।	मैं अभी-अभी सिंहल सीखता हूँ ।

पाठ—२२

निमल्, लखनऊ कवदद आवे ?	निमल लखनऊ कब आया ?
ओहु अद दहयट पमण आवेय ।	वह आज लगभग दस बजे आया था ।
ओहु समग वेन कवुद आवें ?	उसके साथ और कौन आया ?
ओहु समग ओहुगें अम्मा सह मल्लो आवा ।	उसके साथ उसकी माँ और उसका छोटा भाई आया ।
ऐयि, ओहुगें तात्ता आवें नैद्द ?	क्या, उसके पिताजी नहीं आये ?
नैह, ओहु आवें नैत ।	नहीं, वे नहीं आये हैं ।
ओत्र दुम्रियपलट गियाद ?	क्या, तुम स्टेशन गये थे ?
ओव्, मम दुम्रियपलट गिया ।	जी हाँ, मैं स्टेशन गया था ।
निमल्गें लियमन मट अद लैबुणा ।	निमल की चिट्ठी मुझे आज मिली ।
अद दुम्रिय पैयक् पमावी आवाय ।	आज रेलगाड़ी एक घंटा देर से आयी ।
मम नवयटम दुम्रियपलट गिया, दुम्रिय दहयट आवा ।	मैं नौ बजे ही स्टेशन पहुँचा, गाड़ी दस बजे आयी ।
ओवुन् लखनऊ वलिन् पिटनवुने कवदाद ?	वे लखनऊ से कब रवाना हुए ?

ओवुन् ईयें रँ दह्यट लखनउवलिन् पिटन्वूह ।	वे कल रात दस बजे लखनऊ से रवाना हुए ।
निमल् लखनऊ वलिन् गेनावें मोन-वाद ?	निमल् लखनऊ से क्या लाया ?
ओहु लखनऊ वलिन् लसूसन रेंदि गेनावा ।	वह लखनऊ से सुन्दर कपड़ा लाया ।
ओहुगें अम्मा मोनवद गेनावें ?	उसकी माँ क्या लायी ?
ओहुगें मव रानीट सेल्लम्वडु गेनावा ।	उसकी माँ रानी के लिए खिलौने लायी ।
ईयें ह्वस (सवस) ओब गियें कोहेद ?	कल शाम को आप कहाँ गये थे ?
ईयें ह्वस मम पन्सलट गिया । (गियेमि)	कल शाभ को मैं मन्दिर गया था ।
पन्सलें सिट हुन्गक् पमावी गेदर आवा । (आवेमि)	मन्दिर से देर में घर आया ।
ईयें एहें हुन्गक सेनन्ग अैवित सिटिया (सिटियोय) ।	कल वहाँ बहुत लोग आये हुए थे ।

पाठ—२३

मेँ अपेँ गेदरयि, मेँ गेदर लोकुयि।	यह हमारा घर है, यह घर बड़ा है।
मेहि अपि सियलुदेन वासय करमु।	इसमें हम सब लोग रहते हैं।
मेँ मगे कामरयियि।	यह मेरा कमरा है।
मेँ गेदर कामर पहक् तिबेनवा।	इस घर में पाँच कमरे हैं।
कामर तुनक लोकुयि।	तीन कमरे बड़े है।
कामर देकक् पोडियि।	दो कमरे छोटे है।
ऐं लोकु कामरय मगेँ तान्तागेय।	वह बड़ा कमरा मेरे पिताजी का है।
एहि मगे तान्ता इन्नवा।	उसमें मेरे पिताजी रहते हैं।
ऐं कामरेँ बडु हुन्गक तिबेनवा।	उस कमरे में बहुत सामान है।
एहि दोरवल् देकक् सह जनेँल हतरक् तिबेनवा।	उसमें दरवाजे दो और खिड़कियां चार हैं।
मगेँ कामरय लन्ग एक पोडि कामरयक तिबेनवा।	मेरे कमरे के पास एक छोटा कमरा है।
एहि मैसिन् एकक् सह बडु हुन्गक तिबेनवा।	उसमें एक मशीन और बहुत सामान है।
ऐ कुस्सियियि।	वह रसोईघर है।
कुस्सिय पोडियि।	रसोईघर छोटा है।

अम्मा एहि कैम उयनवा।	माँ उसमें खाना बनाती है।
गेदर इस्सरह मिदुलक तिबेनवा।	घर के सामने आँगन है।
अपि मिदुलें सेल्लम् करनवा। (करमु)	हम आँगन में खेलते हैं।
मिदुलें पोडि उयनक् तिबेनवा।	आँगन में एक छोटा उद्यान है।
एहि पलतुरु पैल (छोटे पेड़) तिबेनवा।	उसमें फल के पौधे है।
मम हैमदाम पैलवलट वतुर दमनवा।	मैं प्रतिदिन पौधों को पानी देता हूँ।
गेदर पिटुपस एक लिन्दक् तिबेनवा।	घर के पीछे एक कुँआ है।
लिन्द हुन्गक् लोकुयि।	कुँआ बहुत बड़ा है।
अपि लिन्दें वतुरेन् नानवा।	हम कुएं के पानी से नहाते हैं।
अपें गेदर एक गिरवेक् इन्नवा।	हमारे घर में एक तोता है।
अपि गिरवाट पलतुरु कन्न देनवा।	हम तोता को फल खाने देते हैं।
अपि ऊट बोहोम आदरय करनवा।	हम उसको बहुत प्यार करते हैं।
ऊ अपि समन्ग कतात् करनवा।	वह हमारे साथ बोलता भी है।

पाठ—२४

में दुम्रिय यन्ने कोहाटद ?	यह रेलगाड़ी कहाँ जायगी।
मेय कोलम्ब्र यनवा।	यह कोलम्बो जायगी।
में दुम्रिय पिटत्वन्नें कीयटद ?	यह गाड़ी कब रवाना होगी।
मेय दहयट पिटत्वेनवा।	यह दस बजे रवाना होगी।
मेय कोलम्ब्रट यन्ने कीयटद।	यह कोलम्बो कब पहुँचेगी ?
मेय पैय तुनकिन् यनवा।	यह तीन घंटे में पहुँचेगी।
अनुराधा अद तुवर सिट एनवाद ?	क्या, अनुराधा आज तुवर से आयेगी ?
ओव् अय सवसट एन्नीय।	जी हाँ ! वह शाम को आएगी।
अय एन्नें कवुरुन् समन्गद ?	वह किसके साथ आयेगी ?
अय मगें अम्मात् समन्ग एविं (एनवा)	वह मेरी माँ के साथ आएगी।
मंगे अम्मात् अद तुवर सिट एनवा।	मेरी माँ भी आज तुवर से आएगी।
कमला, अद सवस ओब यन्नें कोहेद ?	कमला, आज शाम को आप कहाँ जाएगी।

मम अद सवस टवुमट यनवा ।	मैं आज शाम को बाजार जाऊँगी ।
ओवत् टवुमट यनवाद ?	आप भी बाजार जायेंगे ?
ओव् , ममत् यनवा ।	जी हाँ, मैं भी जाऊँगी ।
ओव मगें गेदर एनून ।	आप मेरे घर आइये ।
हा, एन्मन् अपि देदेंनम एकट यमु ।	जो हाँ आऊँगी, हम दोनों साथ चलें ।

पाठ—२५

बैळ्ळी सीयन् पसुपस दुवमिन् सिटियि । (सिटिनवा)	बिल्ली चूहों के पीछे दौड़ रही है ।
ळमयि गन्गें नामिन् सिटिति ।	लड़के नदी में नहा रहे हैं ।
मम एक लियमनक् लियमिन् सिटिमि ।	मैं एक पत्र लिख रहा हूँ ।
अपि अपें पाड़म मतक्करमिन् सिटिमु ।	हम अपना पाठ याद कर रहे हैं ।
कुरुल्लो अहसें इगिलेति ।	पक्षी आकाश में उड़ रही हैं ।
ओहु गंन्गा नम् गन्गें नामिन् सिटियि ।	वह गंगा में नहा रहा है ।
रमणी विभागय सन्दहा सूदानम् वेमिन् सिटी ।	रमणी परीक्षा की तैयारी कर रही है ।
मम में सिसुनट उगन्वमिन् सिटिमि ।	मैं इन विद्यार्थियों को पढ़ा रही हूँ ।
नुम्ब पोतक् कियवमिन् सिटिनवा ।	तुम एक पुस्तक पढ़ रहे हो ।
धोबी गन्गें रेदि सोंदमिन् सिटियि (सिटिनवा)	धोबी नदी में कपड़ा धो रहा है ।
दड़यक्कारया कुरुल्लन् अल्लमिन् सिटियि ।	शिकारी पक्षियों को पकड़ रहा है ।

ळमयि पासैलें सिट गेद्र यमिन सिटिति ।	लड़के पाठशाला से घर जा रहे हैं ।
मगें तात्ता उदें दुमरियेन बोम्बायट यनवा ।	मेरे पिता जी सुबह की गाडी से बम्बई जा रहे हैं ।
दुम्रिय यन्नें नैत । (नैह्)	रेलगाडी नहीं चल रही है ।
मोनरा कैलें नटननें नैह् ।	मोर जंगल में नाच नहीं रहा है ।
रमेंश दैन में गेद्र वासय करन्नें नैत ।	रमेश अब इस मकान में नहीं रहता है ।
तुम्बें वैडकारया कडयेन पलतुरु गेंनेनें नैत ।	तुम्हारा नौकर बाजार से फल नहीं ला रहा है ।
दड़यककारया मुवा पिटुपस दूवन्नें नैह् ।	शिकारी हिरन का पीछा यहीं कर रहा है ।

पाठ—२६

निर्मला मोकुत् करमिन सिटियें नैह।	निर्मला कुछ नहीं कर रही थी।
गै मियन् सोरा पिटुपस दुवमिन नोसिटियोय।	गांव वाले चोर के पीछे नहीं दौड़ रहे थे।
मगें अश्वया पारें दुवमिन् नोसिटियेंय।	मेरा घोडा सड़क पर नहीं दौड रहा था।
मगें मल्ली हिन्दी कियवमिन् नोसिटियेंय।	मेरा छोटा भाई हिन्दी नहीं पढ़ रहा था।
ओहु गमट पयिन् यमिन् सिटियें नैह।	वह गांव को पैंदल नहीं जा रहा था।
ऐं दरकपन्ना दर विकुणमिन सिटिये नैह।	वह लकड़हारा लकड़ी नहीं बेच रहा था।
ओहु गेदर सिटियें नैह।	वह घर में नहीं था।
मगें तात्ता पुवत्पत बलमिन् सिटिये नैह	मेरे पिताजी समाचार-पत्र देख नहीं रहे थे।
मगें अम्मा सवस कैंम उयमिन् नोसिटियाय।	मेरी माताजी शाम को खाना नहीं बना रही थी।
गुरुवरया इंग्रीसी उगन्वमिन् सिरियेंद ?	क्या, अध्यापक अंग्रेजी पढ़ा रहे थे ?
ओब मात् समन्ग नगरयट यन्न ऐयि नावें ?	तुम मेरे साथ बाजार जाने के लिये क्यों नहीं आये ?

गोविया कुम्बुर सामिन् नोसिटियेद ?	क्या किसान खेत नहीं जोत रहा था ?
ओव तमन्गें कालय नैतिकरमिन् सिटियें औयि ?	तुम अपना समय क्यों नष्ट कर रहे थे ?
तुम्वट उगनवमिन् सिटियें कवुद ?	तुम्हें कौन पढ़ा रहा था ?
उम्बें वैडकारया ळमया समन्ग कवदाद यमिन् सिटिये ?	तुम्हारा नौकर बच्चे के साथ कब जा रहा था ?
ओव ईयें प्रसन्न को औयि गह्मिन् सिटिये ।	तुम कल प्रसन्न को क्यों पीट रहे थे ?
मगीन् कोहेंद निदागेन सिटिये ?	यात्री कहां सो रहे थे ?
वैडकारया काटद वनिमिन् सिटियें ?	नौकर किसको गाली दे रहा था ?

पाठ—२७

मे वेलावे ल्मया निदागेन औतिद ?	क्या इस समय बच्चा सो रहा होगा ?
रमेश कतनूदरय असमिन् औति नेद ?	क्या रमेश कहानी सुन रहा होगा ?
सुमना दिल्ली यनवा औतिद ?	क्या सुमना दिल्ली जा रही होगी ?
ओवुन् मे वेलावे नामिन् सिटिनवा औतिद ?	क्या वे इस समय नहा रहे होंगे ?
अक्का दैन् कुमक् करमिन् सिटिनवाद ?	बडो बहन इस समय क्या कर रही होगी ?
सीता मे वेलावे पाडम्करमिन औतिद ?	क्या सीता इस समय पढ़ रही होगी ?
ओबे यालुवा कवुरुन् समन्ग गमट यनवाद ?	तुम्हारे मित्र किसके साथ गांव जा रहे हैं ?
ओब हेट मे वेलावट पाडम्करमिन् सिटिन्नेद ?	क्या आप कल इस समय पढ़ रहे होंगे ?
इर नैगेनहिरेन् पाययि ।	सूरज पूरब से निकलता है ।
रत्रन् इता वटिना धातु वर्गयकि ।	सोना एक मूल्यवान धातु है ।
जीवत्वीमट वतुर अवश्ययि ।	जीवन के लिए पानी आवश्यक है।
अलिया इता विसाल शक्तिसम्पन्न तिरिसनेकि ।	हाथी अति विशाल शक्तिशाली जानवर है ।

(पत्तीन्) कुरुल्लन् इगिलेति ।	पक्षी उड़ती हैं ।
मम ईये एक पोतक् मिलट गतिमि ।	मैंने कल एक किताब खरीदी ।
तुम्वें सहोदरया अवंक पुद्गलयेकि ।	तुम्हारा भाई एक ईमानदार व्यक्ति है ।
दुर्बल जनयाट अवमन् नोकरन्न ।	दुर्बलों का अपमान मत करो ।
इंग्रीसीन भारतय अतहैर यनट गियोंय ।	अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये ।
में ईयें मेहि आव ळमयाय ।	यह वही लड़का है जो कल यहाँ आया था ।
उतुरु पलात भारतये सियलूलनटम वडा लोकु राज्ययथि ।	उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य है ।
में ळमया अपें पन्ति नायकयाय ।	यह लड़का हमारी कक्षा का मानीटर है ।
राम सियलुदेनाटम बड़ा होन्द ळमयाय ।	राम सबसे अच्छा लड़का है ।
बल्ला कलगुण दन्ना तिरिसनेकि ।	कुत्ता कृतज्ञ जानवर है ।
ओवें तानता अवंक मिनिसेकि ।	आपके पिता एक ईमानदार व्यक्ति है ।
श्रीलंकाव बौद्ध रटकि ।	श्रीलंका एक बौद्ध देश है ।
अश्वया इता वेंगयेन् दुवन सतेकि ।	घोडा बहुत तेज दोडने वाला जानवर है ।
दुत्पतुनट उदवु करन्न ।	गरीबों की मदद करें ।

पाठ—२८

हरी निदागैनीमट पेर मम पोत कियवा अवसन् केलेमि ।	हरी के सोने से पहले मैंने पुस्तक पढ़ ली थी ।
इर बहिन्न पेर पोलीसिय विसिन् होरुन् अलूलन लदि ।	सूर्य छिपने से पहले पुलिस ने चोरों को पकड़ लिया था ।
इर पायन्न पेर ओहु गेदरिन पिटन्व वैड करन्न गियेय ।	सूर्य निकलने से पहले वह घर से निकल कर काम पर गया था ।
मोहन ओवें सयिकलय सोरकम् केरुवें नैह ।	मोहन ने आपकी साईकिल नहीं चुरायी थी ।
अपें पासलें ळमयि तरन्गयेन् दिनुवोंय ।	हमारे स्कूल के लडके मैच जीत लिये हैं ।
में वैडकारया ओवट उद्व केलेंय ।	इस नौकर ने आपकी सहायता की थी ।
अपि ईयें में गेदरट आवेमु ।	हम कल इस मकान में आये थे ।
ओहु मेहि ऐंमट सितुवे नैह ।	उसने यहाँ आने का सोचा नहीं था ।
ओबें वैड हवसूवनविट अवसन् कैलयुतुव तिबिनि ।	शाम तक आपका अपना काम समाप्त कर लेना चाहिए था ।
किसिवेकु रैवटीम होन्द नैह ।	किसी को धोखा नहीं देना चाहिए ।

ओहु ओहुगे रेदि होन्दट सेदुवेय ।	उसने अपने कपड़ों को अच्छी तरह साफ किया था ।
ओहु इगेनगैनीमट उत्साहवन्तयेक नोवीय ।	वह पढ़ने में उत्साही न था ।
ओहुट किरीमट हैकि हैमदेयक्म कलेंय ।	जो कुछ वह कर सकता था, उसने किया ।
अशोक रजतुमा विसिन पार देपस गस् सिटवूह ।	अशोक सम्राट ने सड़क के दोनों ओर पेड़ लगवाये थे ।
मम में वैड मगें सहोदरया लवा केरेवूवेमि ।	मैंने यह काम अपने भाई से करवाया था ।

पाठ—२९

प्रश्न वाचक वाक्य

तुम्वट अवश्य मोनवाद ?	तुमको क्या चाहिये ?
मम किरि वीदुरुवक् गैनीमट कैमतियि ।	मैं एक गिलास दूध चाहता हूँ ।
तुम्व लियन्नें मोनवाद ?	तुम क्या लिखते हो ?
मम एक लियमनक् लियनवा (लियमि)	मैं एक पत्र लिखता हूँ ।
तुम्वट कियन्न ओंन मोनवाद ?	तुम क्या कहना चाहते हो ?
मोकवत् नैह	कुछ नहीं ।
तुम्वें नम कुमक्द ?	तुम्हारा नाम क्या है ?
मगें नम चम्पाय ।	मेरा नाम चम्पा है ।
तुम्वें तात्ता कुमक् करनवाद ?	तुम्हारे पिताजी क्या काम करते हैं ?
मगें तात्ता गुरुवरयेकि ।	मेरे पिताजी अध्यापक हैं ।
तुम्वें अम्मा कुमक् करनवाद ?	तुम्हारी माताजी क्या करती हैं ?
मगें अम्मा गेदर वैंड़ करन्न इन्नवा ।	मेरी माताजी घर का काम सम्भालती है ।

नुम्ब में दिनवल करन्ने कुमक्द ?	तुम इन दिनों क्या कर रही हो ?
मम सत्वेनि पन्तियें इगेन-गन्नवा ।	मैं सातवी कक्षा में पढ़ रही हूँ ।
नुम्ब आगरा वल दैक्कें कुमक्द ?	तुमने आगरा में क्या देखा है ?
मम ताज्महल् बैलुवा ।	हमने ताजमहल को देखा है ।
नुम्बतात्ताट लीवें मोनवाद ?	तुमने पिताजी को क्या लिखा ?

पाठ—३०

सामान्य विषयों से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर

ओव इंग्रीसि इगेनगन्नवाद ?	क्या आप अंग्रेजी पढ़ते हैं ?
ओव्, मम इंग्रीसि इगेनगन्नवा।	हाँ, मैं अंग्रेजी पढ़ता हूँ।
लता ओवें गेदर एनवाद ?	क्या लता आपके घर आती है ?
ओव्, अैय विटिन्-विट एनवा।	हाँ, वह कभी-कभी आती है।
अनित् यालुवोत् ओवें गेदर एनवाद ?	क्या दूसरे मित्र भी आपके घर आते हैं ?
ओव्, अनित् यालुवोत् मा लन्गट एनवा।	हां, दूसरे मित्र भी मेरे पास आते हैं।
में पोतम ओवट अवश्यद ?	क्या, यही पुस्तक आपको चाहिए ?
ओव् मट में पोतम उवमनाय।	जी हां, यही पुस्तक मुझे चाहिये।
अैयि, कमला में पोतम पाङम्-कतमिन् सिटिनवाद ?	क्यों, कमला इसी पुस्तक को पढ़ती रहती है ?
नैह, ऍं वेन पोतकि।	नहीं, वह दूसरी पुस्तक है।
ओब दैंनू कड्यट यन्ने नैदद ?	क्या आप अब बाजार नहीं जा रही हैं ?

नॖ॒ह, मम दॖ॒न् कड़्यत यन्ने नॖ॒ह ।	जी नहीं, मैं अब बाजार नहीं जा रहीं हूँ ।
ओव, सीताट लियमनक् लीवाद ?	क्या आपने सीता को कोई पत्र लिखा है ?
ओव्, मम अ॒यट लीवेमि ।	हां, मैंने उसे लिखा है ।
सोता ओवें लियमनट पिलितुरक् एव्वाद ?	क्या, सीता ने आपके पत्र का उत्तर दिया है ?
नैह, अैयगेन् तवम उत्तरयक् आवें नैत ।	जी नहीं, अभी कोई जवाब नहीं आया है ।
ओव कवुद ?	आप कौन है ?
मम एक शिष्ययेक्मि	मैं एक विद्यार्थी हूँ ।
ऐं अय कवुरुन्द ?	वे कौन हैं ?
ऐं मा दन्ना अन्दुनन अययि ।	वे मेरे परिचित हैं ।
गीयक् गैयुवें कवुद ?	गीत किसने गाया ?
गीतय मगें यालुवेक् गैयुवेंय ।	गीत मेरे एक दोस्त ने गाया ।
कडमण्डियट यन्नें कवुद ?	मार्केट कौन जायगा ?
मम कडमण्डियट यनवा ।	मैं मार्केट जाऊंगा ।
में वैडय करन्न पुलुवन् काटद ?	यह काम कौन कर सकता है ?
एय कमलाट करन्न पुलुवन् ।	उसे कमला कर सकती है ।
ओहु पासैलट यन्नें केसेंद ?	वह स्कूल कैसे जाता है ।
ओहु बस्एकेन् पासैलट यनवा ।	वह बस से स्कूल जाता है ।

ओबे तातूतागे सैपसनीप कोहोमद ?	आपके पिताजी कैसे हैं ?
ओहुट सनीप नैह ।	वे स्वस्थ नहीं है ।
ओब शिम्ला गिये कोहोमद ?	आप शिमूला कैसे गये ?
मम शिमूला डुमूरियेन गियेसि ।	मैं शिमला रेलगाड़ी से गया ।
ओब आपसु आवे केसेंद ?	आप वापस कैसे आये हैं ?
मम बसयेन आपसु आवेमि ?	मैं बस से लौटा ।

पाठ—३१

काल सूचक शब्दों से बने वाक्य

ओवुन् देसैम्बरवलदी मेहि ऐन्नोय (ऐवि)	वे दिसम्बर में यहाँ आयेंगे।
मम सन्दुदाट ऐहे यन्नेमि (यनवा)	मैं सोमवार को वहाँ पहुँचूँगा।
मम तुन हमारट मेहाट आवेमि।	मैं साढ़े तीन बजे यहाँ आया।
मम उदे इकमणट नैगिटिनवा (नैगिटिमि)	मैं सुबह जल्दी उठता हूँ।
माला दवल् पसुवी पासैलट यथि (यनवा)	माला दोपहर बाद स्कूल जाती है।
माला उदे नवयटत्, कमला दहयटत् एनवा।	माला प्रातः नौ बजे और कमला दस बजे आती है।
माला कमलाट पेर एनवा,	माला कमला से पहले आती है
कमला मालाट पसुवी एनवा।	कमला, माला के बाद आती है।
कडवल् उदे हत हमारें सिट सवस हतवन तेक ऋैर तिबे।	दुकाने सवेरे साढ़े सात बजे से शाम सात बजे तक खुलती हैं।
ऋैय ईये सवस पह वेनतुरु मेहि सिटियाय।	वह कल यहाँ सायं ५ बजे तक थी।

ळमयि हैमदाम पैय देकक् पमण सेल्लम् करति ।	लड़के प्रतिदिन लगभग दो घंटे खेलते हैं ।
ओहु पेरेदा सिट मेहि सिटियेय ।	वह परसों से यहाँ रहता है ।
ओब हये सिट मेहि वै़ड़ करनवा ।	आप छह: बजे से काम कर रहे हैं ।
दैन मम मेहि अवुरुदु देकक सिट वासय करनवा ।	अब मैं यहाँ दो वर्ष से रह रहा हूँ ।
ओब कोपमण कालयक सिट सिंहल इगेनगन्नवाद ?	आप कितने समय से सिंहल सीख रहे हैं ?
मम अ़ैयट पेर लिया इवरवुनेभि ।	मैंने उससे पहले ही लिखकर समाप्त कर दिया ।
अ़ैय तवम आवे नै़त ।	वह अभी नहीं आयी ।
चित्रपटिय आरम्भवोमट लन्गयि ।	सिनेमा शुरू होने वाला है ।
मम मगे वै़ड ईलन्ग सिकुरादा वनविट अवसन् करमि ।	मैं अपना काम अगले शुक्रवार तक समाप्त कर लूंगा ।
ओहु ओहुगे वै़ड पै़य हतरकिन पमण अवसन् करावि ।	वह अपना काम लगभग चार घंटों में समाप्त कर लेगा ।
मम मेहाट तुनट पमण पै़मिनियेमि ।	मैं यहाँ लगभग तीन बजे पहुँचा ।
कमला आवाट पसु माला यन्ट गियाय ।	कमला के आने के बाद माला चली गयी ।

पाठ—३२

दूकानदार एवं ग्राहक

ओबट अवश्य (उवमना) मोनवाद ?	आपको क्या चाहिए ?
तैंगि दीम सन्दह। मट एक लसूसन ओरलोंसुवक ओंनैं।	उपहार देने के लिए मुझे एक सुन्दर घड़ी चाहिये।
करुणाकर में पैनत-बलनन, हैम विधियकम गैणु ओरलोंसु में कल्मारियें तिबेनवा।	कृपया इस तरफ देखिये, हर किस्म की जनानी घड़ियां इस केस में रखी हैं।
करुणाकर अर ओरलोंसुवपेन्वनन।	कृपया वह घड़ी दिखाइये।
कोंपमण सुनदरद ? मेहि मिल कीयद ?	कितना सुन्दर है ? इसकी क्या कीमत है ?
रुपियल् देसिय पणहयि।	ढ़ाई सौ रुपये।
देसिय पणहयि ! मिल वोहोम वैडियि।	ढ़ाई सौ ! दाम बहुत ज्यादा है।
मिल वैंडि नैह, मेय इता होन्द ओरलेंसुवक्।	दाम ज्यादा नहीं है, यह बहुत अच्छी घड़ी है।
नमुत् मट मिल अड्ड एकक् ओंनं ओव लन्ग नैदूद ?	लेकिन मुझे कुछ सस्ती एक चाहिए, क्या आपके पास नहीं है ?

अ॑पि लन्ग औ॑यि नैन्तें ? में तियेन्नें टिकक् मिल अड्ड ऐंवाय ।	हमारे पास क्यों नहीं है ? ये सब कुछ कम दाम वाली हैं ।
मेंवायें मिल कीयद ?	इनकी क्या कीमत है ?
मेंवा सियल्लगें मिल एक समानयि एकक मिल रुपियल् देसीययि ।	इन सबका दाम बराबर है, एक की कीमत दो सौ है ।
होन्दयि में एक ओरलोंसुवक् पेट्टियकुत् समन्ग देन्न ।	अच्छा ! इनमें से एक घड़ी डिब्बे के साथ दीजिए ।

पाठ—३३

ओव होन्द ळमयेक् बव सैंम मिनिहेकूम दन्नवा ।	हर एक मनुष्य जानता है कि आप एक अच्छे लड़के हो ।
उम्ब बासयकरन्ने कोहेंद ? मम हरियट दन्नें नैह ।	मैं सही-सही नहीं जानता कि तुम कहां रहते हो ।
पोलोव गोलाकार बव ओव दन्नवाद ?	क्या आप जानते हैं कि पृथ्वी गोल है ?
ओव मट कियन्न पुलुवन्द ओहुगें नम कुमकद् किया ?	क्या, आप मुझे, बता सकते हैं कि उसका नाम क्या है ?
ओहु दुर्वलयेक् बव ऐतृतकि ।	यह सच है कि वह दुर्बल है ।
ओहु मे अवुरुद्दे विभागय देनवाद-नैद्द मम हरियट दन्नें नैह ।	वह इस वर्ष परीक्षा देगा या नहीं मुझे सही ज्ञात नहीं है ।
ओव मेंवर पास् वेंविद नैद्द मम कियन्नें कोहोमद ?	आप इस साल पास होंगे या नहीं ? मैं कैसे बता सकता हूँ ?
ओहु पासैलेन् अस्कल बव कताविणि ।	वह स्कूल से निकाल दिया गया है यह चर्चा थी ।
ओव यमक् कियन्नेंद एय ऐतूतयि ।	जो कुछ तुम कहते हो वह सत्य है ।
अनुला विसिन् यमक् कीवेंद ऐं बोरुय ।	जो कुछ अनुला ने कहा वह झूठ थी ।

तम गुरुवरयागें कतावट हित योदवा अहन्न।	अपने अध्यापक की बात ध्यान-पूर्वक सुनें।
ओहुगें तानता ओहुट कवदावत् नोगहन वव निहाल् .दैनगेन सिटियेंय।	निहाल जानता था कि उसके पिता उसे कभी नहीं पीटेंगे।
मम गसट यन्ने कवदाद ओवट कियन्न मट अमारुयि।	मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि मैं गांव कब जाऊंगा।
ओहु मेंवर नोवरदवाम समन-वेंवियियि अपि वलापोरोत्तु वेनवा	हम आशा करते हैं कि वह इस साल अवश्य पास होगा।
कमला तमनूगे पाडम् नोकल वव माला कीवाय।	माला कहती है कि कमला ने अपना पाठ याद नहीं किया।
यमक् ओहु कीवेंद एय अैतूतयि।	उसने जो कुछ कहा वह सत्य है।
ओव कुमक् कीवेंद मट मतक .नैंह।	मुझे याद नहीं तुमने क्या कहा।
मम गेदर यन्नेमियि ओहु कीवेय।	उसने कहा था कि, मैं घर जा रहा हूँ।
ओहुगें अम्मा असनीप वव अद मट असन्न .लैंविणि।	आज मैंने सुना कि उसकी माता बीमार है।

अनागत कालय

मम .दैन् कडयट यन्नें नैंह।	मैं अब बाजार नहीं जाऊंगा।
उम्ब में वैडय करन्नें नैंदूद ?	क्या तुम यह काम नहीं करोगे ?
मम ओहुगें अगुण कियन्ने नैंह।	मैं उसका अपमान नहीं करूंगा।
ओहु सेलूलम् वलन्न यन्ने नैंह।	वह खेल देखने नहीं जायगा।

होन्द ळमयि कवदावत् बोरु कियन्ने नैह।	अच्छे बच्चे कभी झूठ नहीं बोलते।
रानी अद लियमनक् लियन्ने नैह।	रानी आज पत्र नहीं लिखेगी।
ओहु तुम्वत् समन्ग कवदावत् एहि यनेनें नैह।	वह तुम्हारे साथ वहां कभी नहीं जायगा।
तुम्वें अम्मा नुम्वट होन्द अैन्दुम् देनन्ंय।	तुम्हारी माताजी तुम्हें अच्छे कपड़े देती है।
अपि अपें वैड होन्दट करन्नेमु।	हम अपना काम अच्छा करेंगे।
मम ओवट अलुत् पोत् एवन्नेमि।	मैं आपको नयी किताबें भेजूंगा।
वडुवा अद पुटु हुन्गक् हदन्नेय।	वढ़ई आज बहुत कुर्सियां बनायेगा।
ओवूहु अद नुम्वट कैम देनने नैह।	वे आज तुम्हें खाना नहीं देंगे।
ओवें अक्का हेट दुम्रियेन् मद्रासियट यन्नेंय।	आपकी बड़ी बहन कल् रेलगाड़ी से मद्रास जायगी।
अपि हेट कन्द उडट गोस् सरुंगल यवन्नेमु।	कल हम लोग पहाड़ पर जाकर पतंग उड़ायेंगे।
मम अनिद्दा दिल्लिय वलन्न यन्नेमि।	मैं परसों दिल्ली देखने के लिए जाऊंगा।
अद ळमयि पासैलट यनवाद ?	क्या लड़के आज स्कूल जायेंगे ?
दड़यक्कारया एक मुवेकु मरन्नेंय।	शिकारी एक हिरन को मारता है।
ओव इता सुन्दर नलावक् मिलट गन्नवाद ?	क्या, आप बहुत सुन्दर एक बांसुरी खरीदेंगे ?
नुम्वें सहोदरया मगें वैड कुमक्निसा करन्नेद ?	तुम्हारा भाई मेरा काम क्यों करता है।

अद औयि ओहु वैड़ड़ यन्ने नैत्तें ?	आज क्यों वह काम पर नहीं जायेंगा ?
ओंव ओवें अम्मा बलन्न हेट रोहलट मात् समंग यनवाद ?	क्या आप अपनी मां को देखने के लिए कल मेरे साथ अस्पताल जायेंगे ?
ओव में .वैडय इवर करन्ने कवदाद ?	आप यह काम कब खतम् करेंगे?
मम ओवें सहोदरयाट सिंहल उगन्वन्नेमि ।	मैं आपके भाई को सिंहल सिखाऊंगा ।
कमलागें वैडकारया ओवें वैडद कर देन्नेंय ।	कमला का नौकर आपके काम भी कर देगा ।
हेट .रै ओब .पैय कीयक् पाडम करनवाद ?	कल रात को आप कितने घंटे तक पढ़ेगे ?
होन्द सिसुन् तमागें गुरुवरया कियनदेय अहन्नेंय ।	अच्छे विद्यार्थी अपने गुरुजी की आज्ञा सुनेंगे ।
अपि दुप्पत् जनयाट कन्न देन्नेमु ।	हम लोग गरीब जनता को खाना देंगे ।
पिरिमि ळमया महलु मिनिहाट सिनासेन्नेंय ।	लड़का बूढ़े आदमी पर हँसेगा ।
इरिदाट हैम ळमयेकुम सेल्लम करन्नेय ।	इतवार को हर एक बच्चे खेलेंगे ।
दिवालि दवसट अपि पहन् दल्वन्नेमु ।	दिवाली के दिन हम लोग दिया जलायेंगे ।
लबन अवरुद्दें मम इन्दियावें औविदिन्न यन्नेमि ।	मैं अगले साल भारत में घूमने के लिए जाऊंगा ।

.गैह्णिय द्‌र कपन्‌ट कैलेंट यन्‌नीय। — औरत लकड़ी काटने के लिए जंगल जायगी।

पा.सैलें सिट गेद्‌र आवाट पसु ओहु पोतक्‌ कियवन्‌नेय। — स्कूल से घर आने के बाद वह एक पुस्तक पढ़ता है।

जयन्त इगेनगै नीमट दच्चयेक वन्‌नेंय। — जयन्त पढ़ने में बहुत होशियार होगा।

ढुप्पत्‌.गैह्णिय पलदुरु विकुणा होन्द्‌रम रैंवी गेद्‌र एन्‌नीय। — गरीब औरत फलों को बेचकर बहुत रात होने के बाद अपने घर आयगी।

ळमयि देदेनेक्

पोडि ळमयि देदेनेक् सेल्लमूकरमिन् सिटियेय। एक ळमयकुगें नम सरत् विय। दे.वैन् नागें नम निहाल् विय। सरत् होन्द लमयेकि। ओहु तमागें अम्मा-तात्ताट कीकरु विय। निहाल् एसें नोवीय। अम्मा-तात्ता कियन देयक् ओहु अहुवें नैह।

एक दवसक् में देदेन वत्तकट गियोंय। वत्तें एक अम्ब गहक अमु अम्ब एल्लेमिन् तिबुणि। निहाल् अमु अम्ब कडन् नट विय। सोरकम् किरीम पवययि सरत् कीवेंय। नमुत् ओहु अहुवें नैह। एतकोटम अयितिकारया आवेंय। निहाल बयवी गसेन् बहिन्ट विय। ओहुगे ककुल लिस्सा बिमट वैटुनेंय।

दो बच्चे

दो बच्चे खेल रहे थे। एक का नाम सरत् था। दूसरे का नाम निहाल था। सरत अच्छा लड़का था। वह अपने माता-पिता की आज्ञा मानता था। निहाल अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं मानता था। एक दिन वे दोनों एक बाग में जा पहुँचे। बाग में कच्चे-कच्चे आम लटक रहे थे। निहाल कच्चे आम तोड़ने लगा। सरत ने मना किया। उससे कहा चोरी करना पाप है, आम मत चुराओ। लेकिन निहाल नहीं माना।

तभी माली आ गया। निहाल डर से नीचे उतरने लगा। उसका पाँव फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा।

महलु तात्‌ता

एक गमक दुप्पत् गोवियेक् सिटियेंय। ओहुट पुतुन् तिदेनेक् वूह। ओवुन् सियलुदेनम बोहोम अलसयिन विय। किसिम वैडक् किरीमट ओवुन् कैमति नोवीय। एमनिसा ओवुन्गे पिया (तात्‌ता) बोहोम दुकेन् कल् गेवीय। वरक् में महलुपिया अदनीप वीय। ओहु तम पुतुन् तमा लन्गट केन्दुव्वेंयेय। "मम कुम्बुरें मुदळ टिकक् सन्गवा अैत; मम मैंरुणाट पसु ऐवा गन् नययि"; ओहु तम पुतुन्ट कीवेंय। मेपमनक कियमिन् ओहु मैंरुणेंय। ओहु मेंरुणाट पसु ओहुगे पुतुन् सम्पूर्ण कुम्बुर हैरुवेंय। नमुत मुदल् लैवुने नैह। ओवुन्गे वलापोरोत्तु होन्द नोवीय। ईंट पसु ओवुन कुम्बुर वैपिरीय। मेंवर ओवुन्गे असवतु सरुवीम निंसा बोहोम सतुटु विय।

वृद्ध पिता

एक गाँव में एक किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे। वे सब बहुत आलसी थे। वे कोई काम करना नहीं चाहते थे। अतः उनका पिता बड़ा दुःखी था। एक बार वह वूढ़ा पिता बीमार पडा। उसने अपने पुत्रों को अपने पास बुलाया। उसने "कहा मैंने खेत में कुछ रुपया रख दिया है। मेरे मरने के बाद तुम खेत को खोदकर उसे ले लेना।" इतना कहकर वह मर गया। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्रों ते सम्पूर्ण खेत खोद डाला; किन्तु रुपया नहीं मिला। उनकी नीयत ठीक नहीं थी। अन्त में वे निराश हो गये और उन्होंने खेत में बीज बो दिये। इस वर्ष फसल बहुत अच्छी हुई और वे खुश बहुत हो गये।

तैनट सुदुसु नुवण

सधन कालय विय। कमला सह जयन्त सेललम् करन्न गेद्‌रिन एलियट आवोय। देदेनम पिट्टनियकट गियोय। सेललम् करसिन् खिटियदी नला हन्डक अैसा जयन्त वटपिट वै.लीय। ढुमरियक् दकिन्न लै.वुगु ओहु रेल पीलि देस चेलीय। एक तै.नकिन रेल पीलि पेरलो अैति वव ओहु दैककंय।

ढुम्‌रिय दिगटम आवोत् एक पेरलेन वव ओहु सीतीय। एयिन मिनिसुन् ट तुवालवेंवि। समहरु मैरैंवी। ओहु इकमन्ट कमलागे करे तिबुगु रतु रेदि .कैल्ल गेन एयिन् कोडियक सै.दुवैंय। रेल पीलि .मैद्‌देन् यमिन् ओहु कोडिय सोलवन्ट विय। ढुम्‌रिय पदवन्ना जयन्त .दैक ढुम्‌रिय .नैवतवीय। ओहुगे मे तुवण निसा हुन्गक मिनिसुनगे जीवित बेरागत .हैकिविय।

स्थानोचित प्रज्ञा

संध्या का समय था। कमला और जयन्त खेलने के लिए घर से बाहर निकले। दोनों एक मैदान में पहुँचे। खेलने के समय सीटी बजाने की आवाज सुनकर जयन्त चारों तरफ देखने लगा। एक रेलगाड़ी को आते देखने के साथ ही उसकी नजर रेल की पटरी पर भी पड़ी। रेल की पटरी एक जगह से उखड़ी हुई थी।

जयन्त ने सोचा अगर रेलगाड़ी आ गयी तो वह गिर जायगी। यात्रियों को चोट लगेगी। कई लोगों की तो जानें भी जायेंगी। उसने झटपट कमला के गले में लिपटा लाल कपड़े के टुकड़े को ले लिया और उसका झंड़ा बनाया। वह पटरी के बीचोबीच भागता हुआ झंडे को हिलाता गया। रेलगाडी चालक ने उसे देखकर गाडी रोक दी। उससे बहुत लोगों की जानें बच गयी।

कृतज्ञ कुत्ता

एक गमक महलु मिनिहेक् तम स्त्रियत् समन्ग वासयकरसिन् सिटियेंय । मोवुन् वोहोम दुप्पन् वूह । अवुरुद्द पुराम महलु मिनिहा कुमक् हो .वैडक करभिम सिटियेंय ए वुनन् ओवुन्ट हरि आदायमक् नोवीय । मं देदेनट ळमयि नोवीय। ओवुन्ट वल्लेक सिटियह । ऊट इता आदरय कलह । दवसक् महलु मिनिहा तमागें वैड अवसन् किरीमेन् पसुव ओविदीम सन्दहा .कैलैय पैन्तट पिटत्-विय। ओहु समन्ग ओहुगें स्त्रियन्, वल्लान् पिटन् वूयेंय । एक-एक .तैन्वल वल्ला नतर वन्नट विय। ऊ पोलवें एक .तैनक इव अल्लन्ट विय। ऊ महा हयियेन् .कै गसा पोलव हारन्ट पटन्गतह । महलु मिनिहा तम स्त्रियत् समन्ग वहाम ऊ लन्मट आवेंय । वल्ला हारपु .तैन पोलवें रत्रन् कासि तिवेनवा ओवुन् दुठुवेंय । ऐंवा .दैक मोवुन् वोहों सतुटट बत्वूह ।

कृतज्ञ कुत्ता

एक गांव में एक बूढ़ा और उसकी पत्नी रहा करते थे । वे बहुत गरीब थे । साल भर कुछ न कुछ काम किया करते थे । फिर भीं उसकी आय बहुत कम थी । उनके बच्चे नहीं थे । उनके पास एक सुन्दर कूत्ता था । जिसे वे बहुत प्यार करते थे । एक दिन शाम को बूढ़ा अपना काम समाप्त करके जंगल की ओर टहलने निकला । उसके साथ उसकी पत्नी और कुत्ता भी निकले । एकाएक एक जगह पर कुत्ता रुक गया । जमीन में उसने कुछ सूंगा । फिर वह जोर से भूंका और जमीन को खुरेदने लगा । तुरन्त वृद्ध और उसकी पत्नी उसके पास पहुँच गये । जहाँ कुत्ते ने जमीन खोदी थी वहाँ उनको सोने के सिक्के दिखाई दिये । उन्हें देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए ।

कठिन शब्द

महलुा मिनिहा	=वृद्ध मनुष्य
दुप्पत्	=गरीब
कैलैंव, वनय	=जंगल
इव अल्लनवा	=सूंघगा
आदरय	=प्यार
रत्रन् कासि	=सोने के सिक्के
सैंम स्थानयक्म	=सभी स्थान
सतुटु	=प्रसन्न

अैता

लोकये सिटिन तिरिसनुन् गेन् इता विसालम सता अलियाय अैताय हो .अलिया देस ब्लनविट पुदुम .अैतिवेनवा। उगें ककुल इता विसालय। उगें कन कुल्लक् वगॅाय। नमुत उगें .अैस् इता पुँचिय। ऊट इता दिग होन्डवैलक् तिवेनवा। अतेन् करगतयुतु .वैड ऊ होन्ड.वैलट अरगेनयि।

इता विसाल अलिया लस्सन सतेक नोवेयि। ऊट इता वेंगयेन गमन्.करन्ट पुलुवन् । समहर विट मोहु अश्वयाटद वड़ा वेंगयेन दुवनवा। इन्दियाव अफ्रिकाव, श्रीलंकाव आदि रटवल विसाल .कैलैवल मोवुन् जीवत्वेनवा। रंचु वसयेन् जीवत्वीमट ओवुन् .कैमतियि। उक्, केसेल्, पोल् सह कोस् अतु ऊगें प्रधान आहारययि।

हाथी

संसार का सबसे शक्तिशाली तथा सबसे बड़ा जानवर हाथी है। वह देखने में बड़ा विचित्र लगता है। इसके पैर बड़े भारी होते हैं। इसके कान सूप के समान है। किन्तु इसकी आँखें छोटी होती हैं। इसकी सूंड लम्बी होती है। हाथ से जो काम करना होता है वह सूंड से कर लेता है यह इससे ही पानी भी पीता है।

हाथी बहुत भारी तथा देखने में सुन्दर नहीं लगता है। किन्तु वह बहुत तेज चल सकता है। कभी-कभी यह घोड़े से तेज जाता है। हाथी भारत, अफ्रीका, श्रीलंका आदि देशों के जंगलों में रहते हैं। झुंड में रहना यह पसन्द करता है। गन्ना, केला, नारियल और कटहल की डालें इसका प्रधान भोजन है।

कठिन शब्द

पुदुम	= विचित्र, अद्भुत
होन्डवै.ल.	= सूंड
पुंचि	= छोटा
दिग	= लम्बा
रै.ल, रंचुव	= झुंड
उक्	= गन्ना
कोस्	= कटहल
केहेल्	= केला
पोल्	= नारियल
जीवत्वेनवा	= रहता है
वैं.गयेन्	= तेजी से, तेज
ककुल्	= पैर
कुल्ल	= सूप

मित्र-धर्म

राजन् होन्द ळमयेकि। ओहु उदे नैंगिट ओहुगें अममाट सह तात्ताट वन्दिनवा। ओहु हैमदाम उदे नैंगिट ओहुगे मित्र दीपक समन्ग ऑविदिन्न यनवा। में मेंदेन पासैट यन्नैद एकटयि। ओवुन् पा सैलें वैड इता ओंनेकमिन् करनवा। एमनिसा ओवुन् ट ओवुन्गें गुरुतुमा आदरय करनवा।

में देदेन वासय करन नें एकम गमकय। देदेनगें गेवल्द लन्ग-लन्ग पिहिटा औत। पासै लें सिट गेदर आवाट पसु देदेनम टिकवेलावक् सेल्लम् करन्न यनवा। हवस् वेलावे राजन् तमागें पोतुद रै गेन दीपक गें गेदरट यनवा। देदेनाम पैय कीपयक् एकट इन्दगेन पाडम् करनवा।

मित्र-धर्म

राजन एक अच्छा लड़का है। वह सुबह उठकर अपने माता-पिता को प्रणाम करता है। वह रोज बहुत सुबह उठकर अपने मित्र दीपक के साथ टहलने जाता है। दोनों मित्र एक साथ स्कूल भी जाते हैं। वे स्कूल के काम बहुत मन लगाकर करते हैं। इसलिए अध्यापक भी उन्हें बहुत प्यार करते हैं।

ये दोनों एक ही गांव में रहते हैं। दोनों के घर भी बहुत पास-पास में है। स्कूल से घर आने के बाद दोनों कुछ देर तक खेलने जाते है ? शाम के समय राजन भी अपनी किताबें लेकर दीपक के पास जाता है। दोनों एक साथ कुछ घंटे पढ़ते हैं।

कठिन शब्द

नै.न्गिट = उठकर

वन्दि़नवा = प्रणाम करता है

श्रै.विदि़न्न = टहदृना।

श्रोनैंकमिन = इच्छापूर्वक

एमनिसा = इसलिए

वासयकरनवा = रहता है

लन्ग-लन्ग = पास-पास में

श्ररगेन = लेकर

पेय कीपय्क = कुछ घंटे।

वार्तालाप (A DIALOGUE)

सरत : आयुबोवन् ! कमला नोना, सैप सनीप कोहोमद ? ओब यन्ने कोहेद ?

नमस्कार, श्रीमती कमला ! आप कैसी हैं? आप कहां जा रही हैं?

कमला : आयुबोवन् , महत्मया, होन्दयि । मम नुवर यनवा ।

नमस्कार साहब, मैं अच्छी हूँ । मैं नुवर जा रही हूँ ।

सरत : नोना, नुवर यन्ने कोहोमद ?

मेमसाहब, नुवर कैसे जायेंगी ?

कमला : मम बस्एकेन नुवर यनवा ।

मैं बस से नुवर जाऊँगी ।

सरत : नुवरट बस्कुलिय कीयद ?

नुवर के लिए बस का किराया क्या है ?

कमला : रुपियल् तुनयि सत पणहयि ।

साढ़े तीन रुपये ।

सरत : नुवर यन्न रैल्लुवक् नैद्द ?

क्या नुवर जाने के लिए रेलगाड़ी नहीं है ?

कमला : हवस देक हमारट रैल्लुवक् तियेनवा । ओब यन्ने कोहेद ?

शाम को ढ़ाई बजे एक ट्रेन है । आप कहाँ जा रहे हैं ?

सरत : मम मातर यनवा ।

मैं मातर जा रहा हूँ ।

कमला : औब मातर यन्नें कोहोमद ?

आप मातर कैसे जायेंगी ?

सरत : मम रेंलुवेन मातर यनवा ।

मैं ट्रेन से मातर जाऊँगा ।

कमला : मातरट रेंलूकुलिय कीयद ?

मातर के लिए रेल का किराया क्या है ?

सरत : रुपियल हतभिसत विसिपहयि ।

सात रुपये पच्चीस पैसे ।

कमला : नुवर यन्न बस् एक एनवा । मम गिहिन् एन्नम् आयुबोंवन् ।

नुवर के लिए बस आ रही है । मैं जा रहा हूँ । नमस्कार !

सरत : आयुबोंवन् नोंना । होन्दयि गिहिन् एन्न ।

नमस्कार, मेमसाहब । अच्छा, हो आइये ।

अपि ईयें अनुराधपरें गिया ।

हम लोग कल अनुराधपुर गये थे ।

मम उदें हतट पमण पयिन्म दुम्रियपलट आवा ।

मैं सुबह लगभग सात बजे पैदल ही स्टेशन पहुँचा ।

मगें यालुवा कार एकेन् दुम्रियपलट आवा ।

मेरा दोस्त कार से स्टेशन पहुँचा ।

अपि अनुराधपुरें यन्न टिकट् देकक् गत्ता ।

हम लोग अनुराधपुर जाने के लिए दो टिकट लिये ।

दुम्रिय एनकन् अपि इन्दगेन हिटिया ।

गाड़ी आने तक हम लोग बैठे रहे ।

दुम्रिय स्टेंसमट आव ।

गाड़ी स्टेशन पर पहुँची ।

दुमरियपले एय नैवैततुवा ।

स्टेशन पर उसे रोक दिया गया ।

अपि देवनि पन्तियें पेट्टियक इन्दगतुता ।

हम लोग दूसरे दर्जे के एक डिब्बे में बैठ गये ।

टिक वेलावकिन् दुम्रिय पिटत्वुना ।

थोड़ी देर में गाड़ी चल दी ।

दुम्रिय हरि वेगयेन् गिया ।

गाड़ी बहुत तेजी से गयी ।

दुम्रिय रात्री नवयट पमण अनुराधपुरयट आवा ।

गाड़ी लगभग रात के नौ बजे अनुराधपुर पहुँची ।

अपि दुम्रियेन बैसुसा ।

हम लोग गाड़ी से उतरे ।

अपि हैम तैनम बलन्न गिया ।

हम लोग हर जगह देखने गये ।

अपि मिहिन्तलें बलन्न बस्एकेन् गिया ।

हम लोग मिहिन्तलै देखने के लिए बस से गये ।

ईट पसु अपि बस्एकेन् मन्नारमट गिया ।

इसके बाद हम लोग बस से मन्नारम गये ।

वराय बलननन् गिया । वरायें नैव् देकक् तिबुना । अपि बोटुवेन् नैवट गिया ।

बन्दरगाह देखने गये । बन्दरगाह में दो नांव थे । हम लोग बोट से नाव पर गये ।

अपि अहस्यानयेन् रत्मलानट आवा ।

हम लोग हवाई जहाज से रतमलान आये ।

रत्मलाने सिट कारएकेन् गेदर गिया ।

रत्मलान से कार में घर गये ।

अयिया बयिसिकलयेन् टवुमट गिया ।

बड़ा भाई साईकिल से बाजार गया ।

वेलेन्दा करत्तयेन् वडु गेनावा।
व्यापारी बैलगाड़ी से सामान ले आया।
ओवें नम मोकक्द ?
आप का नाम क्या है ?
मगें नम रंजित्।
मेरा नाम रंजित है।
ओवें गम कोहेद ?
आप का गांव कहां है ?
मगें गम वदुल्ल।
मेरा गांव वदुल्ल है।
ओवें वयस कीयद ?
आप की उमर क्या है ?
मगें वयस अवुरुदु पहलोवयि
मेरा उमर पन्द्रह साल है।
ओवें अग्मा तात्ता इन्नवाद ?
आपके माता-पिता है ?
ओव् मगें अम्मा सह तात्ता गेदर इन्नवा।
जी हाँ, मेरी माता और पिता घर में है।
ओवट अयियला अक्कला इन्नवाद ?
आपके भाई-बहन है ?
ओव् मट एक अयियेकुत् अक्कला देन्नेकुत् इन्नवा।
जी हाँ मुझे एक बड़ा भाई और दो बड़ी बहने है।
मट मल्लिला देन्नेकुत् एक नंगियेकुत् इन्नवा।
मेरे दो छोटे भाई और एक छोटी बहन है।
रंजित्, ओब पासैल् यनवाद ?
रंजित, आप कूल जायेंगे ?

ओव् मम पा.सैलट यनवा। मम इगेनगन्ने अटवेनि पन्तियेय।
जी हां, मैं स्कूल जाता हूँ। मैं आठवें क्लास में पढ़ता हूँ।
मम उदे पहट .नैगिट .पैय देकक् पाडम् करनवा।
मैं सुबह पांच बजे उठ कर दो घंटे पढ़ता हूँ।
उदें अटट मम मल्लीत् समग पासैंलट यनवा।
सुबह आट बजे मैं छोटे भाई के साथ स्कूल जाता हूँ।
हवस तुनट पमण पासैलें सिट बसएकेन् गेदर एनवा।
शामको तीन बजे के करीब बस से घर आ जाता हूँ।
हवस .पैय देकक् पमण सेल्लम् करनवा।
शाम को लगभग दो घंटे पढ़ता हूँ।
रैं दहयट मम निन्दागन्नवा।
रात्री दस बजे मैं सोता हूँ।
पा.सैलें वैड मम योहोम होन्दट करनवा।
स्कूल का काम मैं बहुत अच्छी तरह करता हूँ।
एंनिसा मट गुरुवरू हुन्गक आदरेयि।
इसिलिए मुझे मास्टर लोग बहुत प्यार करते हैं।

एलवलु वेलेन्दा सह मिलयट गन्ना।

सब्जी वाला और खरीदार।

एन्न महत्मयाननि, अद एलवलु लाबयि।
आईये साहब, आज सब्जी बहुत सस्ती है।
बोन्चि किलोवक् कीयद ?
बीन एक किलो कितने के है ?
बोन्चि किलोवक् रुपियलयि।
एक किलो बीन एक रुपये का है।
वम्बटु रात्तलक् कीयद ?
बैगन एक सेर कितने के है,

वम्वटु रातूतल सत पर्णाहयि ।

एक सेर बैंगन पचास पैसे की है ।

करुणाकर मट वोन्चि किलोवक् हा वम्वटु रातूतलक देन्न

कृपया मुझे एक किलो बीन और बैंगन एक सेर दीजिये ।

वेन मोनवद महत्मया ओंन ?

और क्या चाहिये साहब ।

मट देहि रातूतल् बागयक देन्न ।

नीबू आधा सेर दीजिये ।

लूनु रातूतलक कीयद ?

पियाज एक सेर कितने के हैं ?

लूनु रातूतलक रुपियलयि ।

एक सेर पियाज एक रुपये का है ।

मट लूनु रातूतलकुत देन्न ।

मुझे एक सेर पियाज दीजिये ।

दोडम् गेडियक् कीयद ?

मोसम्बी कितने कितने के हैं ?

एंवा बोहोम लावयि, ओबट कीयक् ओंनद ?

ये बहुत सस्ते हैं । आपको कितना चाहिए ।

दोडम् गेडि दहयक् देन्न ।

दस मोसम्बी दीजिए ।

मेन्न बिल महत्मयाणनि ।

साहब ये हैं बिल ।

मेन्न मुदल्

ये हैं पैसे (रुपये)

बोहोम स्तुतियि

बहुत धन्यवाद ।

दूकानदार और ग्राहक

एन्न महत्मयाणनि, अद होन्द मस् तियेनवा।
आइये साहब, आज बहुत अच्छा मांस है।
अद एलु मस् रात्तलक् कीयद ?
आज बकरे का मांस एक पौंड कितने का है।
कटु नैति एलु मस् रात्तलक् रुपियल् तुनयि।
हड्डी रहित बकरे का मांस रुपया पौंड है।
कटुत समन्ग रात्तलक् रुपियल् देकपि सत पणहयि।
हड्डी सहित एक पौंड मांस एक रुपये का है।
मट कटु नैति एलुमस् रात्तम देकक् देन्न।
हड्डी रहित बकरे का गोस्त दो पौंड दीजिये।
ओंवट पीकुदु रात्तलकुत् देन्नद ?
क्या आज की कलेजी भी एक पौंड दूं ?
हा, मट पीकुदु रात्तल् वागयक् देन्न।
हां, मुझे कलेजी भी आध पौंड दीजिये।
मेन्न रुपियल् दहये नोट्टुवक् मट इतिरि मुदल् देन्न।
यह दस रुपये है। मुझे बाकी पैसे दीजिए।
मसुत् कवरयक दाला देन्न।
मांस भी थैली में डालकर दीजिए।
महत्मया वेन कडयकट गियेय।
साहब दूसरी दुकान पर गये है।
मट में लैयिस्तुवें बडु देन्न।
मुझे इस लिस्ट के सामान दीजिए।
होन्दयि महत्मयाणनि। लैयिस्तुव देन्न।
होन्दयि साहब। लिस्ट दीजिए।

ओव ऐंवा लियागन्न। अरतापल् अल रात्तल् एकयि। सुदुलूनु रात्तल वागययि, गर्म्मिरिस् ग्रैम् सीययि, मिरिस् ग्रैम् देसीययि, परिप्पु सेरू एकयि, लुनु सेरु एकयि।

आप लिख लें। आलू एक पावुन्ड, लहसुन आधा पावुन्ड, काली मिर्च सौ ग्राम, मिर्च दो सौ ग्राम, दाल एक सेर, नमक एक सेर।

मेन्न बडु = ये सामान है। मुदल गन्न = पैसे लीजिए।

दो मित्र होटल पर

तिस्स:–अपि दैन् हुन्गक् अैविद्दा। मट दैन् बोहोम तिवहयि। अर होटलयट गोस् तें वोमु।

हम लोग बहुत घूम चुके। मुझे अब बहुत प्यास लगी है। चलें, उस होटल में पहुँचकर चाय पी लें।

जयन्त : होन्दोय अपि यमु।

अच्छा चलें

तिस्स:–अपि मेसय लन्ग वाडिवेमु। अपि कन्नें मोनवाद ? ओब .कैमति .पैणिरस कैविलि वलटद ? .नैत्नम् पान् सह बटरवलटद ?

हम मेंज के पास बैठें। हम लोग क्या खायेंगे ? आप मीठा-पसन्द करते हैं या डबलरोटी मक्खन ?

जयन्त:–केसेल्गेडि समन्ग पान् सह बटरवलट मम कैमतियि।

केले के साथ डबलरोटी और मक्खन पसन्द करता हूँ।

तिस्स :–ममत् कैविलिवलट .कैमति .नैह। अपि पान कमु।

मुझे भी मीठा पसन्द नहीं है। हम डबलरोटी ले।

जयन्त : मोनवद अपि बोन्नें ? मम तेंवलट कैमति नैह, सिसिल् यमक् बोन्न .कैमतियि।

हम क्या पीयेंगे ? मुझे चाय पसन्द नहीं है। ठन्डी कोई चीज चाहता हूँ।

तिस्स : ओब सिसिल्(अयिस्)कोपि बोनवद ? दोडम् इस्म बोनवद ?

आप ठण्डो आइसक्रीमी पायेंगे ? मोसम्मी का रस ?

जयन्त : मम दोडम् इस्म वीदुरुवक् गन्नन्।

मैं मोसम्मी का रस एक ग्लास लूंगा।

तिस्स : मम .कैमति होन्द उणु तें कोप्पयकटयि।

मैं गरम चाय का एक प्याला लूंगा।

जयन्त : कों बलन्न बिल। रुपियल् हतरयि सत पणहयि। मम गेवन्नम्।

देखें ! चार रुपये (और) पैसे पचास है। मैं भुगतान करुंगा।

तिस्स : .नैह-.नैह मम गेवन्नम् = नहीं-नहीं मैं दूँगा।

नहीं-नहीं, मैं भुगतान करता हूँ।

रोगियेकु सह मित्रयेकू अतर कतावक्

यालुवा : ओबट दैन् कोहोमद निहाल्।
निहाल, अब आप कैसे हैं ?

रोगिया : मट दैन् उण .नैह नमुत् तवम मगें पपुवें वेदनावक् तिवेनवा।
अब मुझे ज्वर नहीं है लेकिन अभी मेरी छाती में दर्द है।

यालुवा : तुम्बट ईयें रें निन्द गियाद ?
क्या कल रात आप को नींद आयी ?

रोगिया : रात्री एकट पमण मट.अहेरुना, ईट पसु मट निन्द गियें .नैह।
रात में एक बजे के लगभग मेरी नींद टूट गई तब से मुझ नींद नहीं आयी।

यालुवा : अद उदें ओव वलन्न दोस्तर आवाद ?
क्या आज प्रातः आपको देखने डॉक्टर साहब आयें थे ?

रोगिया : ओव् ओहु अवित् मा होन्दट .बैलुवा।
जी हां, आकर उन्होंने मुझे अच्छी तरह देख गये।

यालुवा : ओबट .दैन् कन्न देन्नें मोनवाद ?
अब आप को खाने के लिये क्या देते हैं ?

रोगिया : मट तवम देन्नें बोन देवल् पमणयि।
अभी मुझे पीने की ही चीजें दे रहे हैं।

यालुवा : ओबट उण नैति निसा दवसकिन्, देककिन् कन्नत् दैवि।
आपको ज्वर न होने के कारण एक दो दिन में खाने को भी देंगे।

रोगिया : ओबट मगें अम्मा हमुवुनाद ? माव बलन्न .अय एनवाद ?
क्या आप को मेरी मां मिली ? क्या मुझे देखने वहाँ आयेगी ?

यालुवा : .ओव् अय एंवि। मम दैन् यन्नम् ! ओबट इक्मणट सुवय .लैबेवा।
जी हां, वह आयेगी। मैं अब जाऊँगा। आप जल्दी ही स्वास्थ्य हो !

रोगिया : आयुबोवन् ! ओवें .पैमिणीमट बोहोम स्तुतियि।
नमस्कार ! आप आये इसके लिए धन्यवाद।

—धन्यवाद !!!

20, नुगेगोड
श्री लंका
७-२-७७

निमन्त्रण-पत्र

(१)

प्रिय महातागेनी,

बोहोम सुलु कालयकदी ओब सिंहल इगने गने तिवै। एम निसा दैन् ओबट श्रीलंकावट पैमिन तमागे वैडकर गनीमट हैकिययि विश्वास करमी।

ऍ हैयिन मेम लिपिय मगिन मम ओबट आराधना करमि। ओबट पहसु कलक पैमिण मासयक, देकक् कोलम्ब सिटिन्न एन्न। मेहि पुस्तकालये साहित्य भण्डारयेन भारत श्री-लंकावे मैत्रीय स्थिर कीरिम संदहा सिंहल ग्रन्थ अध्ययन करन्न। बड़ातूहोंद ग्रन्थयक हिन्दियट परिवर्तन करन्न। हैकि सैम उदव्वकम मम देमि।

ओबगें विश्वासदायक,
आर० विजयतुंग

प्रिय महोमय,

आपने बहुत कम समय में सिंहल भाषा सीख लिये हैं। अतः अब आप श्रीलंका में आकर अपने सब कार्य स्वयं करने में समर्थ हैं, ऐसा मैं विश्वास करता हूं।

अतः पत्र के द्वारा मैं आपको निमन्त्रण देता हूं। आप अपनी सुविधानुसार एक दो मास के लिये कोलम्बो आकर रहें। यहां के पुस्तकालय में उपलब्ध साहित्य भन्डार से भारत श्रीलंका की मैत्री को पुष्ट करने के लिये सिंहल ग्रन्थों का अध्ययन करें। अधिक उपयोगी कोई ग्रन्थ हो उसे हिन्दी में अनुदित भी करें। इसमें हर सम्भव सहयोग हम आपको देगें।

आपका विश्वासभाजन
आर० विजयतुंग

गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली
१-२-७७

(२)

प्रिय महताणेनि;

नव दिल्लिये गाँधी स्मारक निधिये, मेम मस १६ वेनि दिन सवस ५-३० महजन सभावक पैवें.त्वीमट तीरणय कर गेन अैत। एम सभावट ओव तुमाद पैमिन सहभागिवनलैस अति गौरवयेन आराधना कर सिटिमु।

करुणाकर मेम आराधनय पिलिगत् ववट लिपियक लिया एवन सेन मतक् कर सिटिमु।

ओवगे विश्वासदायक
रा० राहुल

(२)

प्रिय महोदय,

गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली में इस मास १६ तारीख को सायं ५'३० बजे एक आम सभा करने का निश्चय किया गया है। हम आपको भी उक्त सभा में सम्मिलित होने के लिये बहुत ही गौरव के साथ निमन्त्रित करते हैं।

कृपया इस निमन्त्रण को स्वीकार करने की पुष्टि में एक पत्र लिखकर भेजने का कष्ट करें।

आपका विश्वासी
रा० राहुल

परिशिष्ट—१

इस पुस्तक में प्रयुक्त व्याकरण सम्बन्धी शब्दों की सूची—

सर्वनाम

मम = मैं	अपि = हम
ओव = आप	ओवला = आप लोग
ओहु = वह	ओवुहु = वे
औं = वह (स्त्री)	औं = वे (स्त्री०)
तो = तू	तोव = तुम
ऊ = वह	उन = वे
तमुसे = आप	तमुसेला = आप लोग
ओव = तुम, आप (आन्दर)	ओव वहन्से = आप (आदर)
नुम्व = तुम	नुम्वला = तुम लोग
एहिं = वहाँ	मेहि = यहाँ
वेमि = हूँ	वेमु = हैं

विभक्ति

कम विभक्ति	कर्तृ विभक्ति
करण विभक्ति	सम्प्रदान
अवधि विभक्ति	सम्बन्ध विभक्ति
आधार विभक्ति	आलपन विभक्ति

लिंग

पुरुष लिंग	स्त्री लिंग
समान लिंग	नपुसंक लिंग

नाम (पद्)

जाति नाम	द्रव्य नाम
गुण नाम	क्रिया नाम
संज्ञा नाम	सर्वनाम
उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष
अन्य पुरुष	अप्राणी वाचक
क्रिया पद	प्रयोज्य क्रिया
असभाव्य क्रिया	विधि क्रिया
आशीर्वाद	क्रिया
मिश्र क्रिया	

काल

वर्तमान काल, अतीत काल, अनागत काल

प्रश्न सूचक अव्यय

कवुद ?	कौन ?
कुमकूद ?	क्या है ?
कुमटद ? ऐयि ?	क्यों ? किसलिए ?
कवदाद ?	कब
केसेंद ?	कैसा ? कैसे ?
कागेंद ?	किसका ? किनका
काटद ?	किसको ? किनको ?
कीयद ?	कितना, कितने ?
कोपमन ?	कितना ?

निपात और उपसर्ग

निपात—

उदाहरण—मिस, हैर, अतिरिक्त	विसिन् , लवा, द्वारा
करण कोट गेन—द्वारा	निसा, वैविन—के कारण
सन्दहा, उद्देसा, पिनिस—वास्ते	तुरु, तेक, दक्वा—तक
केरेहि—में, प्रति,	मेन, से, वैनि् वागे—जैसे, तरह
पमण, तरम, वितर-लगभग करीब	वेत, करा—तक, पास

सम्बन्ध वाचक निपात

सह, हा, द, त्—और, तथा, भी	समन्ग, कैटुव, एकक—से, के सइ
नमुत्—लेकिन	हो—या, अथवा
नोहोत—अर्थात्	नम्—तो

पद पूर्ति करनेवाले निपात

दन्—अभी, अब	अद—आज ।
एदा—उस दिन	वहा, तुरन्त, जल्दी
नितर—निरन्तर, अक्सर, प्राय:	

उपसर्ग

पवल =प्रबल, व्याप्त	परदेश =विदेश
अवलक्षण =अवलक्षेण	सदोस =दोष रहित
अनुवल =सहारा	निरोगी =रोग रहित
दुदन =दुर्जन	विरूप =विरूप
अकीकरू =अवज्ञाकारी	अधिकरण =अधिकरण
सुपिपि =अच्छी तरह खिला हुआ	
उगेनुम =सीखना	अविमानय =अभिमान्
अपकीर्तिय =अपकीर्ति	पस्विसि =पच्चीस
पिलिगत्=स्वीकृत, मान लिये गये	अतिगैम्वुरू =बहुत गहरा
पिदीम =पूजा	उपकरण =चीजें

विशेषण शब्द

होन्द = अच्छा
नरक = बुरा
लस्सन = सुन्दर
तित्त = कड़ुवा
पैंनिरस = मीठा
अँम्बुल = खट्टा
लुनुरस = नमकीन
अन्धया = अन्धा
लाब; लाभ = सस्ता
पिरिसिदु = साफ
अपिरिसिदु = गन्दा
कपटि = चालाक
शीतल = ठंडा
सामान्य = साधारण
इक्मनट = जल्दी
हेमिन् = धीरे
दैन—अभी
पसुव = बाद में
समान = समान्
अ-समान = असमान
गैंलपेन = उपयुक्त
नो गैंलपेन = अनुपयुक्त
मोड़ = मूर्ख
बुद्धिमत्, पंडित = बुद्धिमान
निदहस् = स्वतंत्र
वैंदि = बंधनयुक्त
अतुल = ताजा, नया
परण = पुराना
पिरुण = भरपूर
णय = उधार

ऊष्ण = गरम
दुप्पत् = गरीब
पोहोसत = अमीर
गोलु = गुंगा
बिहिरि = बहरा
अमारु—कठिन
पहसु = आसान
अवंक = ईमानदार
वंक = बेईमान
बोरु = झूठ
अँतूत—सही, सत्य
अमु = कच्चा
इदुणु = पक्का
वेंलुणु—सूखा
उस = ऊँचा
मिटि = नाटा
कन्द = पहाड़
वैंरम = ढाल
उड = ऊपर
बिम = नीचे
बड़गिन्न = भूख
पिपासय = प्यास
असनीप = बीमारी
उवमना = आवश्यक
नुउवमना = अनावश्यक
लोकु = बड़ा
कुड़ा·छोटा
अन्तिम = अन्तिम
पसुवो = देर से, पीछे
अलस = आलसी

सतुट = खुशी, प्रसन्नता
अमारु = कठोर, कठिन
वर = भार, भारी
सैहैलूलु = हल्का
कोमल = कोमल
कणगाटु = दुखी
नूतन = आधुनिक
तरुण = तरुण
महलू = बूढ़ा
स्थिर = पक्का
शिष्ट = सभ्य, शिष्ट
सिहिन् = दुबला, पतला
बुरुल = ढ़ील
पिन्वत् = पुण्यवान
पिस्सा = पागल
उदासीन = उदासीन
प्रवेसम = सुरक्षित
सामान्य = सीधा
तनिव = अकेला
एकतुव = एक होकर
महन्सि = तका हुआ
अँनूत = सच

परिशिष्ट—२

वर्गीकृत शब्द सूची—

परिवार

पवुल = परिवार
अम्मा = माता
अक्का = बड़ी बहन
नंगी = छोटी बहन
दुव = दुहितृ, बेटी
मिनिहा = आदमी
सहोदरया = भाई
मामा = मामा
वाप्पा = चाचा
पिया = पिता
सीया = दादा
बैना = दामाद
तात्ता = पिता
अय्या = बड़ा भाई
मल्ली = छोटा भाई
पुता = पुत्र, बेटा
द्रुवा = बालक
गैनी = औरत
सहोदरी = बहन
मामी = नैन्दा
पुँचि अम्मा = चाची
मव = माता
आच्ची = दादी
लेली = पुत्र-वधु

घर के अंग प्रत्यंग

कुस्सिय	रसोई घर
निदन कामरय	सयन कक्ष
कामरय	कक्ष, कमरा
कैम कन कामरय	भोजन कक्ष
वाडिवेन सालाव	बैठने का कक्ष
वाहन तबन गेय	रथ शाला
वैसिकिलिय	शौचालय
मिदुल	आंगन
दोर	दरवाजा
जनेलय	खिड़की
उलुवस्स	चौखट, देहरी
एलिपत्त	
तमागे = स्वकीय	बोरु = झूठ
शान्त = शान्त	वैडकट औति = काम का, उपयोगी
सूदानम् = तैयार	वैडकट नैति = निकम्मा; अनुपयोगी
तद = कड़ा	तेत = गीला
महत = मोटा	सियल्ल = सब
हरि = ठीक	वैरदि = गलत
वटकुरु = गोल	वनचर = जंगली
गैमि = देहाती	व्यर्थ
नागरिक = नागरिक, शहरी	मिहिरि = मधुर

पाट रंग

कलु = काला	निल् = नीला
सुदु = सफेद	रतु = लाल
कह = पीला	कोल = हरा
दम् = बैंगनी	दुम्बुक = भूरा
रोस = गुलाबी	तैम्बिलि = नारंगी
ला पाट = हल्का रंग	तद पाट = गहरा रंग

सप्ताह के दिन

इरिदा = रविवार
सन्दुदा = सोमवार
अन्गहरुवादा = मंगलवार
बदादा = बुधवार
बृहस्पतिन्दा = गुरुवार
सिकुरादा = शुक्रवार
सेनसुरादा = शनिवार

अंग्रेजी बारह महीने

जनवारी = जनवरी
पेब्ररवारि = फरवरी
मारतु = मार्च
अप्रेल = अप्रैल
मैयि = मई
जूनि = जून
जूलि = जुलाई
अगोस्तु = अगस्त
सेप्तेम्बर = सितम्बर
ओक्तोबर = अक्टूबर
नोवेम्बर = नवम्बर
देसेम्बर = दिसम्बर

सिंहल महीने एवं समय

बकमस = चैत्र
वेसक मम = वैशाख
पोसोन = ज्येष्ठ
असळ मस = आषाढ़
निकिणी मस = श्रावण
बिनट = भाद्रपद
वप् मस = अश्विन
यल मस = कार्तिक
उदुवप् मस = मार्गशीर्ष
दुरुतु मस = पौष
नवम् मस = माघ
मेदिन मस = फाल्गुन
अवुरुद्द = साल
मासय = महीना
सतिय = सप्ताह
दवस = दिन
पैय = घण्टा
मिनित्तुव = मिनिट
तत्परय = सेकेंड
पान्दर = सवेरे, भोर
उदे = सवेरे
दवल = दिन
रैय = रात्रि
हवस = शाम
ईरमुदुन् कालय = दो पहर
सतिदेक = पक्ष, दो सप्ताह
वर्षा कालय = वर्षा ऋतु
ऊष्ण कालय = गरम ऋतु
शीत कालय = शीत ऋतु
पसलोस्वक = पूर्णिमा
अमावक पोय = अमावस्या
अद = आज
हेट = आगमी काल
ईये = गत काल
अनिद्दा = आगमी परसों
पेरेदा = गत परसों

विरुद्धार्थ पद

कैमति : अकैमति
कीकरु : अकीकरु
करुणावन्त : अकरुणावन्त
क्रमक : अक्रमक
ज्ञानवन्त : अज्ञानवन्त
नियम : अनियम
पक्षपात : अपक्षपात
दक्ष : अदक्ष
पहसु : अपहसु
प्रमाण : अप्रमाण
पैहपत् : अपैहपत्
युक्तिय : अयुक्तिय
वासिय : अवासिय
विश्वासय : अविश्वासय
गुण : अवगुण
गैम्बुरु : नोगैम्बुरु
रस : नीरस
बय (भय) : निर्भय
लक्षण : अवलक्षण
सरु : निसरु
वैरदि : निवैरदि
सतुट : असतुट
वैदगत् : नोवैदगत्
उवमना : नुवुवमना
हैकि : नोहैकि
दन्ना : नोदन्ना
वटिना : नोवटिना
अलुत् : परण
अन्दुरु : आलोक
अतीत : वर्तमान

पसन्द—नापन्द
आज्ञाकारी—अनाज्ञाकारी
दयालु —निर्दयी
नियमित —अनियमित
ज्ञानी —अज्ञानी
नियत —अनियत
वफादार —बेवफादार
होशियार—बेहोशियार
आसान —मुश्किल
सीमित —असीमित
अच्छा —बुरा
न्याय —अन्याय
लाभ —हानि
विश्वास —अविश्वास
गुण —अवगुण
गहरा —उथला
रुचिकर—अरुचिकर
डरपोक —बहादुर
सुन्दर —असुन्दर
सार —निस्सार
गलत —ठीक
सन्तुष्ट —असन्तुष्ट
महत्वपूर्ण—अमहत्वपूर्ण
आवश्यक—अनावश्यक
समर्थ —असमर्थ
ज्ञात —अज्ञात
मूल्यवान —अमूल्यवान
नया —पुराणा
अंधेरा —प्रकाश
अतीत —वर्तमान्

अवश्य	:	अनवश्य	आवश्यक—अनावश्यक
अरिनवा	:	वह्नवा	खोलना —बंद करना
आदरय	:	अनादरय	आदर—अनादर
आशीर्वादय	:	शापय	आशीर्वाद—श्राप
उदय	:	हवस	सुवह—शाम
उस	:	मिटि	ऊंचा—नाटा
कडिसर	:	कम्मैलि	चुस्त—सुस्त
महत	:	केट् टु	मोटा—पतला
तरुण	:	महलु	तरुण—वृद्ध
तद	:	बुरूल	तंग—ढीला
तात्ता	:	अम्मा	पिता—माता
प्रेम	:	पिळकुल	प्रेम—घृणा
अय्या	:	अक्का	बड़ा भाई=बड़ी बहन
मल्ली	:	नंगी	छोटा भाई—छोटी बहन
बाप्पा	:	पुंचि अममा	चाचा—चाची
मामा	:	नैन्दा	मामा—मामी
किरि अत्ता	:	किरि अम्मा	दादा—दादी
दवल्	:	रैं	दिन—रात
मुल	:	अग	आदि—अन्त
परण	:	नवीन	पुराना—आधुनिक
प्रश्नय	:	उत्तरय	प्रश्न—उत्तर
पुता	:	दुव	बेटा—बेटी
पुरुषया	:	स्त्रिय	पति—पत्नि
मोलोक्	:	तद	मृदु—कठोर
मिहिरि	:	अमिहिरि	मीठा—कड़ुवा
उड	:	यट	ऊपर—नीचे
रज	:	बिसव	राजा—रानी
लोकु	:	कुडा	बड़ा—छोटा
शक्तिमन्	:	दुर्बल	मजबूत—कमजोर
शीत	:	ऊष्ण	ठण्डा—गरम
वियलि	:	तेत	सूखा—गीला
सुदु	:	कलु	सफेद—काला
सतुरा	:	मितुरा	शत्रु—मित्र

लिखने के उपकरण

लिवीम—लिखना
पैंन—कलम
पैंन्सल—पेनसिल
तीन्त—स्याही
कडदासिय—कागज
तल्कोलय—ताड़ पत्र
पन्हिन्द—लोहे को कलम
लियनमेंसय—लिखने की मेज
पेंलिय—लाईन
अकुर—अक्षर
कलुलैंल्ल – श्याम पट्ट
पोत—किताब
पिट—पेज
लियुम—पत्र
लियुम् कोलय—पत्र (कागज)
गल्कूर—नीब
गल्लैंल्ल—सिलौटी
अडिकोदुव—रूल-पटरी
पैंन्तलय—नीब
लियुम् कवरय—लिफाफा

आहार वर्ग खाद्य सामग्री

व्यंजन—व्यजन, शब्जी
सहल्—चावल
कैन्द—माड़, कंजी
दियमस्, मालू—मछली
वियलिमस्—सूखा मांस
एलुमस्—बकरे का मांस
ऊरु मस्—सूवर का मांस
हरक् मस्—गाय का मांस
पला—शाक
लूनु—पियाज
मिरिस्—मिर्चा
रतुलूनु—लाल (छोटे) पियाज
सुदुलूणु—लहसुन
अब—सरसों
सियम्बला—इमली
कह—हल्दी
गम्मिरिस्—गोल (काली) मिर्च
दुरु—जीरा
सीनि—चीनी
पैणि—सीरा
हकुरु—गुड़
विनाकिरि—सिरका
कैविलि—मिष्ठान्न
किरि—दूध
मिदुणु किरि—दही
गितेल्—घी
मोरु—मट्ठा
अल—आलू
मनपैन्—मादक पेय

शरीर के अंग-प्रत्यंग

मुहुन—चेहरा
कट—मुख
हकूक—जकड़ा
दत—दांत
तोल—होंठ
कम्मुल—गाल
निकट—टुड्डी
वेल्ल—गला, ग्रीवा

उरहिस—कन्धा
अत—हाथ
वैलमिट—कोहिनी
लय—छाती
वड—पेट
कलवय—जंघा
मणिक् कट्टुव—कलाई
दिव—जिभ्या
दत—दांत
पपुव—छाती
ककुल, पय—पैर, पाद
अैट—हड्डी
नहरय—स्नायू
केल—थूंक
सेम—कफ
हिसकेस्—केस, वाल
लोम्—लोम, बाल,
उडुरैवुल—मूंछ
कन्दुलु—आँसू
उगुर—गला
पतुल—तलवा
वस्त्रय—वस्त्र
कपुपिलि—कपास के कपड़े
सेरेप्पुव—चप्पल

किहिल्ल—बगल
बाहुव—बाहू
अैंगिल्ल—उंगिली
पिट—पीट
उकुल—गोद
बड बैल—आंत
हम—चमड़ा
नियपोतु—नाखून
तनय—स्थन
केण्डय—घुटना
विलुम्ब—ऐंड़ी
मस्—मांस
नियपोतु—नख, नाखुन
पित—पित्त
दहदिय—स्वेद, पसीना
कोण्डय—जूड़ा, जटा
रैवुल—दाढ़ी
अैह्—आँख
हिस्कबल—खोपड़ी
अल्ल हथेली
यटिबड—पेट का अधो भाग
तोप्पिय—टोपी
पटपिलि—सिल्क के कपड़े
लें—रक्त, खून

गुण (स्वभावयो)

यहपत—अच्छा
तद—शक्त
उस—ऊँचा
दिग—लम्बा
महत—मोटा
उणुसुम्—गरम
सिन पिनवन—प्रियंकर

अयहपत्—बुरा
मृदु—मृदु, मुलायम
मिटि, नाटा,
कोट—नाटा, छोटा
कुडा, पुंचि—छोटा
सिसिल्—ठण्डा
लसूसन—सुन्दर

दत्त—होशियार
मध्यम—मध्यम
पहत्, नीच—अधम
पिरिसिदु—साफ
अडु—कम
बोहो—बहुत
लंगवू—पास
अैदवू—टेढ़ा
बरवू—वजन/युकत
लोभीवू—लोभ
अलुन्—नया
नोसतुटु—असन्तुष्ट
दुप्पत्—दुखी गरीब
वियलि—सूखा
महलु—बूढ़ा
मोट्ट—मूर्ख
पिरुणु—भरा
दरुणु—तेज
कैपू—कटा
दवनलद—जलाया गया
सतरैस्—चौकोर
विरुद्ध—विरुद्ध
तर—मोटा

उतुम्—उत्तम
नपुरु, दुष्ट—क्रूर
कम्मैलि—आलसी
स्वल्प—थोड़ा
वैंडि—ज्यादा
दुरवू—दूर स्थित
अैद नैंति—सीधा
सैहल्लु—हलका
प्रसिद्धवू—प्रकट
परण—पुराना
सतुटुसितैति—प्रसन्न चित्त
सैपवत्—सुखी, अमीर
तेत—गीला
वयसिन् अडु (बाल)—कम उम्र
तियुणु—तीक्ष्ण
पैसुणु—पका
हिस्—खाली
कल, सैंदू—बनाया गया
वेलनलद—बांधा
वटवू—गोलाकार
तुन्मुल्अैति—त्रिकोन
विरुद्ध नोवू—विरुद्ध न हुए
केट्टु—दुबला, पतला

वाहन—सवारी

करत्तय—गाड़ी
अस्रिय—घोड़ा गाड़ी
दोलाव—डोला (पालकी)
विदुलिरिय—इलेक्ट्रिक ट्रेन
नैव—नाव

रथय, रिय—रथ
अैतरिय—हाथी गाड़ी
दुम्रिय—रेलगाड़ी
मोटोरिय—मोटर रथ
अहस्यात्राव—हवाई जहाज

पशु-पक्षी

लेना—गिलहरी
गोनुस्सा—बिच्छू

सर्पया—सर्प
कक्कुलुवा—कछुआ

किम्बुला—मगर
कोका—बगुला
कुकुला—मुर्गा
मोनरा—मयुर, मोर
हंसया—हंस
उकुस्सा—चील
काक्का—कौआ
किकिली—मुर्गी
परविया—कबूतर
तोता—गिरवा
कोवुला—कोकिल
गेंकुरुल्ला—घर गौरैया

कीड़े-मकोड़े

कुडा सत्तू—छोटे जीव
मन्दुरुवा – मच्छर
मैन्डिया—मेढ़क
कूम्बिया—चींटी
पलन्गोटिया—पतिंगा
बम्बरा—भवरा
मकुलुवा—मकरी
उकुणा—जूंआ
मैसूसा—मक्खी
पत्तैया—कंनकजूरा
पणुवा—कीड़ा
वेंया—दीमक
मीमैसूसा—मधुमक्खी
हूना—छिपकली
मकुणा—खटमल

गेडिवर्ग-फल

गेडिय—फल
पैसुणु—पका
केसेल् गेडि—केला
कोस्—कटहल
बेलि—बेल
दोडम्—मोसम्मी
देहि—नीबू
इन्दि—खजूर
पुवक्—सुपारी
लबु—लौकी
कोमडु—खरबूजा
वट्टक्का कुमड़ा
पैपोल्—पपीता
बटु—बैंगन
रम्बुटन—लीची
मैंकरल—लोबिया
अमु—कच्चा
कैंण, वल्ल—गुच्छा
अम्ब—आम
पोल्—नारियल
जम्बु—जामुन
देलुम्—अनार
मुद्दरप्पलम्—अंगूर
तल्—ताड़
अन्नासि—अनानास
पुहुल्—खबहा
कैंकिरि—ककड़ी
करविल—करैला
मिरिस्—मिर्च
तक्कालि—टमाटर
बण्डक्का—भिण्डी
बोन्चि—बीन

नारं—संतरा
वैटकोलु—तोरई
गोवा—गोभी

गस्वैल् वृक्ष और लताएँ

गह—पेड़, वृक्ष
वैल—लता
अम्बगह—आम का पेड़
कोस्गह—कटहल का पेड़
दम्बगह—जामून का पेड़
बोगह—पीपल (बोधि) वृक्ष
पोल्गह—नारियल का पेड़
तल्गह—ताड़ का पेड़
उणगह बांस
उक्गह—गन्ने का पेड़
मल्गह—फूल का पेड़
बुलत्वैल—पान की लता
मल्वैल—फूल की लता
नैट्ट—टहनी
मुल—मूल, जड़
कोलय—पत्ती
लीय—लकड़ी
पोत्त—छिल्का
करल—फली
दलु—नई पत्ती

सामान्य शब्द

मित्रया—मित्र
सतुरा—शत्रु
असल वैसिया—पड़ोसी
रज—राजा
रज मेहेसिय—रानी
रजकुमरा—राजकुमार
रजकुमारिय राजकुमारी
दिलिन्दा—गरीब, निर्धन
धनवता—धनवान, धनी
गोडया—देहाती,
पण्डितया—पण्डित, ज्ञानवान
बीरा—बहरा
गोलुवा—गूंगा
अन्धया—अन्धा
कणा—काना
तट्टया—गंजा
कोरा—लंगड़ा
कुदा—कुबड़ा
अगुटुमिट्टा—नाटा, बौना
वपरया—काना
पिस्सा—पागल
गोविया—किसान
वेलेन्दा—व्यापारी
वेदा—वैद्य
वडुवा—बढ़ई
पेदरेरुआ—थवई, मिस्त्री
नटन्ना—नृतक
नैकैतकियन्ना—ज्योतिषी
रथपदवन्ना—चालक
कथिकया—व्याख्यान कर्ता
ब्रोकर—आढ़ती
दडयक्कारया—शिकारी
शतुमरन्ना—कसाई
सोरा—चोर
वन्चाकारा—ठग
धूर्तया—धूर्त

श्रीलंका द्वीप की जनता जिस नाम से जानी-पहचानी जाती है वही नाम यहाँ की भाषा का भी है और वह नाम है 'सिंहल'। उत्तर भारतीय भाषाओं से मिलती-जुलती इस भाषा का विकास ई०पू० दूसरी-तीसरी शताब्दी के शिला लेखों के बाद हुआ है।

देवनागरी तथा शेष वर्तमान भारतीय भाषाओं के अक्षरों का मूल ब्राह्मी अक्षर है। सिंहल अक्षरों का मूल रूप भी यही ब्राह्मी लिपि है। समय-समय पर परिवर्तित होती हुई वर्तमान स्वरूप में सिंहल लिपि 5वीं शताब्दी में अस्तित्व में आयी।

सिंहल लिपि का उच्चारण पूर्णतया संस्कृत भाषा के उच्चारण के ही समान है, केवल चार स्वर सिंहल भाषा में विशेष हैं। आज की सिंहल भाषा में दो रूप व्यवहार में आते हैं, एक—जो बोलचाल की है, दूसरी—लिखित रूप में अर्थात् साहित्य में प्रयुक्त है।

'सिंहल स्वयं शिक्षक' में साधारण सिंहल का ही परिचय भारतवासियों को देने का प्रयास किया गया है। इसमें इस बात का ध्यान रखा गया है कि कम से कम शब्दों का प्रयोग करके साधारण बोलचाल का अभ्यास कराया जाय।

सिंहल के अपने विशिष्ट उच्चारण हैं। उन्हें देवनागरी के वर्तमान स्वरूप में ही नये चिन्ह लगाकर दिखाये गये हैं। किसी भाषा की विशेषता तथा विशेष उच्चारण किसी दूसरी लिपि में लिखकर नहीं दिखलाये जा सकते हैं, तो भी देवनागरी लिपि में यह क्षमता है कि यह किसी भी स्वर और व्यंजन को आत्मसात् कर दिखाती है।